आयरलैंड की लोक कथाऐं

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Book Title: Ireland Ki Lok Kathayen (Folktales of Ireland)
Cover Page picture: Cathedral of Dublin, Ireland
Publishes Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Web Site: http://sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
Read More such stories at: www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Ireland

विंडसर, कैनेडा

मार्च 2018

Contents

सीरीज़ की भूमिका 4

आयरलैंड की लोक कथाऐं 5

परियों और जादूगरनियों की कहानियॉ 7

1 जादुई दूध 9

2 सींगों वाली जादूगरनियॉ 12

संतों और पादरियों की कहानियॉ 19

3 पादरी की आत्मा 20

शैतानों की कहानियॉ 31

4 काउन्टैस कैथलीन ओशी 33

5 तीन इच्छाऐं 38

राजाओं, रानियों, राजकुमारियों और डाकुओं की कहानियॉ 57

6 बारह जंगली हंस 59

7 आलसी लड़की और उसकी चाचियॉ 71

8 घमंडी राजकुमारी 80

9 मूनाचर और मानाचर 87

10 डोनाल्ड और उसके पड़ोसी 95

11 लो अर्न के सुनहरी सेब 104

12 निडर आदमी 121

13 कवि शौनचन और बिल्लियों का राजा 133

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **400** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
मई **2018**

आयरलैंड की लोक कथाऐं[1]

आयरलैंड यूरोप महाद्वीप के ग्रेट ब्रिटेन देश के पश्चिम में स्थित एक टापू है। यह यूरोप की मुख्य जमीन के उत्तर पश्चिम में है। आयरलैंड अपने किलों, चर्च, पशुपालन, बड़े बड़े घास के मैदानों, दूध की बनी चीज़ों जैसे चीज़ और मक्खन आदि के लिये बहुत मशहूर है।

आयरलैंड की लोक कथाऐं कुछ अलग ही तरीके की हैं। वहॉ जादूगरनियों और परियों की कहानियॉ बहुत पसन्द की जाती हैं। इनमें से जादूगरनियॉ अपनी ताकत बुरी आत्माओं से और परी वाले लोग अपनी ताकत परियों से लेते हैं। जादूगरनियों को लोग अक्सर पसन्द नहीं करते क्योंकि वे दूसरों को नुकसान पहुॅचातीं हैं, परन्तु परियों वाले लोगों को सब पसन्द करते हैं क्योंकि वे सबकी सहायता करते हैं या फिर कभी कभी शरारत भी करते हैं।

सबसे ज़्यादा परियों वाले वे लोग पसन्द किये जाते हैं जिनको किसी समय परियों ने पसन्द किया था, या फिर वे उनको अपने साथ ले गयी थीं और सात साल तक उनको अपने पास रखा और उनको सिखाया पढ़ाया। उनको जड़ी बूटियों और जादू की बहुत सारी बातें भी आती हैं।

लेडी वाइल्ड[2] ने ऐसे ही एक आदमी के बारे में लिखा है – "वह कभी बीयर नहीं पीता था, शराब नहीं पीता था, मॉस नहीं खाता था, केवल रोटी, फल और सब्जियॉ खाता था। जाड़ों और गरमियों दोनों में वह एक ही तरह के कपड़े पहनता था – एक फलालैन की कमीज और कोट। बस।

और अगर कोई उसको खाना खाने के लिये बुलाये भी तो वह उसके यहॉ जाता तो जरूर था पर वहॉ कुछ खाता पीता नहीं था। उसको न तो अंग्रजी आती थी और न ही वह सीखने की कोशिश करता था। हॉलॉकि उसका कहना यह था कि बड़ी मुश्किल से वह उसका इस्तेमाल अपने दुश्मन को शाप देने के लिये कर सकता था।

उसने कभी शादी नहीं की और वह साधारण लोगों से दूर रहता था इसलिये उसको बहुत सारी गुप्त चीज़ें मालूम थीं पर वह कितना भी पैसा ले कर अपनी उन चीज़ों को दूसरों को सिखाने क लिये तैयार नहीं था। पर उसका कहना यह भी था कि अगर वह ऐसा करता तो वह तुरन्त ही मर जाता। उसका यह भी कहना था कि मरने से पहले वह अपनी ताकत का भेद बता कर जायेगा पर उससे पहले नहीं और वह भी केवल एक आदमी को।

उसने अपनी सारी ज़िन्दगी भले कामों को करने में लगा दी और आज जब कि वह बूढ़ा हो गया है, अभी तक कभी बीमार नहीं पड़ा। उसको कभी किसी ने गुस्सा होते भी नहीं देखा।" ऐसे कई लोग वहॉ की स्लीगो काउन्टी[3] में रहते हैं।

इसके विपरीत जादूगरनियॉ बिल्कुल ही दूसरी तरह की होतीं हैं। उनमें से कब्र की सी बू आती है। उनके जादू की सबसे खास चीज़ है "मरा हुआ हाथ"। किसी मुर्दे के कटे हुए हाथ पर वे मन्त्र पढ़ कर वे एक कुऍ तक को मथ सकतीं हैं और उसमें से मक्खन निकाल सकतीं हैं।

---

[1] The stories of this book have been adapted from the book – "Fairy and Folk Tales of Ireland." edited by WB Yeats. New York, Macmilan Company. 1973.

[2] Lady Wilde

[3] Sligo County

एक मरे हुए हाथ की उँगलियों के बीच में फँसी मोमबत्ती को कभी बुझाया नहीं जा सकता। यह चीज़ डाकुओं के लिये बड़ी फायदेमन्द है परन्तु यह प्रेमियों को भी पसन्द है क्योंकि ये हाथ काली बिल्ली के जिगर को सुखा पीस कर प्रेम की दवा बना सकते हैं। ये पाउडर चाय में मिला कर काली केटली में भर कर उससे वह चाय प्याले में डाल कर पीने से ये अचूक दवा का काम करते हैं। इन पाउडरों की सफलता की कहानियाँ अभी तक सुनने में आतीं थीं पर इसको बार बार करना पड़ता है नहीं तो यह प्रेम फिर घृणा में बदल जाता है।

जादूगरनियाँ अपने आपको बदल भी सकती हैं। आयरलैंड में ये अक्सर अपने आपको खरगोश या काली बिल्ली के रूप में बदल लेती हैं इसलिये वहाँ के लोग इनको अच्छा नहीं मानते हैं।

तो लो पढ़ो आयरलैंड की ऐसी ही कुछ अजीबोगरीब लोक कथाऐं। आशा है दूसरी लोक कथाओं के संग्रहों की तरह से यह लोक कथा संग्रह भी तुम सबको बहुत पसन्द आयेगा और आयरलैंड के समाज के बारे में कुछ जानकारी देगा।

परियों और जादूगरनियों की कहानियॉ

1 जादुई दूध[4]

एक बार आयरलैंड के एक गॉव में दो परिवार रहते थे। दोनों परिवारों के पास अच्छी गायें थीं पर हैनलौन परिवार[5] के पास ज़्यादा अच्छी गायें थीं।

वे ज़्यादा दूध भी देतीं थीं और उनके दूध का मक्खन भी ज़्यादा पीला होता था। उस परिवार के पास एक कैरी[6] नाम की गाय थी जो बहुत ही अच्छी थी।

दूसरे परिवार डोहर्टी की एक लड़की ग्रेस[7] बहुत ही सुन्दर थी। पड़ोसी लोग भी उसकी बहुत तारीफ करते थे। ग्रेस को हैनलौन परिवार की वह कैरी गाय बहुत अच्छी लगती थी।

एक दिन ग्रेस रात को मिसेज़ हैनलौन के पास एक अजीब सी फरमायश ले कर गयी। उसने पूछा — "क्या आप मुझे अपनी मोइले गाय[8] को दुहने देंगी?"

मिसेज़ हैनलौन भी ग्रेस की यह अजीब सी फरमायश सुन कर कुछ आश्चर्य में पड़ गयी। उन्होंने उससे नम्रतापूर्वक पूछा — "तुम उस गाय को क्यों दुहना चाहती हो बेटी?"

---

[4] Magical Milk – a folktale of Ireland, Europe

[5] Hanlon Family

[6] Kerry – name of the cow

[7] Grace – name of the girl from Dogherty Family

[8] Moiley cow means a cow without horns

ग्रेस बोली — "कोई ख़ास बात नहीं, बस यूँ ही। मैंने सोचा आपको तो बहुत काम होंगे तो मैं ही आपकी गाय दुह आती हूँ।"

मिसेज़ हैनलौन बोलीं — "नहीं बेटी, अभी मेरे पास बहुत ज़्यादा काम नहीं है इसलिये मैं उसको खुद ही दुह लूँगी। तुमको इस छोटे से काम के लिये मैं परेशान नहीं करना चाहती।"

ग्रेस बेचारी यह जवाब सुन कर घर चली आयी पर अगले दिन वह फिर इसी फरमायश के साथ मिसेज़ हैनलौन के पास आयी। कुछ देर बाद मजबूर हो कर मिसेज़ हैनलौन ने उसको अपनी कैरी गाय को दुहने की इजाज़त दे दी।

ग्रेस खुशी खुशी कैरी को दुहने के लिये गयी पर जल्दी ही वह दुखी हो गयी क्योंकि कैरी ने उस दिन दूध ही नहीं दिया। ऐसा तीन दिन तक होता रहा तो मिसेज़ हैनलौन अपने पड़ोसी मार्क[9] के पास गयीं और उसको सारा हाल बताया।

सारा हाल सुनने के बाद मार्क बोला — "ऐसा लगता है कि तुम्हारी गाय को कोई बुरी नजर से दुह रहा है। ऐसा करो अगर तुम मुझे उसका थोड़ा सा दूध ला दो तो मैं तुम्हें बता सकता हूँ कि वह गाय दूध क्यों नहीं दे रही है। तुम मुझे केवल आधा सेर दूध ही ला दो। मेरे लिये उतना ही दूध काफी है।"

मिसेज़ हैनलौन बोलीं — "ठीक है मैं ला दूँगी।" कह कर मिसेज़ हैनलौन दूध लाने चली गयीं और जब वह दूध ले कर लौटीं

[9] Mark – name of the neighbor

तो मार्क ने उनसे दरवाजा बन्द करने के लिये कहा। फिर मार्क ने उस दूध को सात नयी पिन डाल कर उबलने रख दिया।

वे पिनें दूध में जल्दी ही उबलने लगीं। तभी दरवाजे के पास ज़ोर ज़ोर से आते हुए कदमों की आहट सुनायी दी और फिर ग्रेस के ऊँची आवाज में बोले गये शब्द सुनायी पड़े —

"मिसेज़ हैनलौन, मुझे अन्दर आने दो और अपना यह दूध वाला बरतन भी आग के ऊपर से उतार लो। उसके अन्दर की पिनें भी निकाल लो क्योंकि वे पिनें मेरे दिल में छेद किये दे रही हैं। अब मैं आपकी गाय का दूध कभी नहीं छुऊँगी।"

आयरलैंड में शायद ही ऐसा कोई गॉव हो जिसमें इस तरह दूध न चुराया जाता हो पर इस बात को जानने की कई और तरकीबें भी हैं। कभी कभी हल के फल को आग में खूब तपाया जाता है इससे वे जादूगरनियॉ यह चिल्लाती हुई चली आतीं हैं कि वे आग में जल रहीं हैं।

इसके अलावा घोड़े या गधे की नाल को गरम करके जादूगर के घर के दरवाजे के ऊपर से रात को चुराये गये तीन तिनकों के साथ दूध बिलोने वाले बरतन के नीचे रख देते हैं। उसकी गरमी से भी वे जलने लगती हैं।

2 सींगों वाली जादूगरनियॉ[10]

आयरलैंड की यह दूसरी लोक कथा भी एक जादूगरनी की लोक कथा है।

एक रात एक स्त्री घर में सबके सो जाने के बाद अपनी ऊन ठीक करने बैठी कि अचानक किसी स्त्री ने दरवाजा खटखटाया और कहा — "खोलो खोलो, दरवाजा खोलो।"

स्त्री ने पूछा — "कौन है?"

बाहर वाली स्त्री ने कहा — "मैं हूँ एक सींग वाली जादूगरनी।"

घर की स्त्री को लगा कि पड़ोस की कोई स्त्री उससे किसी तरह की सहायता मॉगने आयी है सो उसने दरवाजा खोल दिया। एक स्त्री अन्दर घुसी। उसके हाथ में ऊन साफ करने की मशीन थी और उसके सिर पर एक सींग था जैसे वह उसके सिर से ही उगा हो।

वह घर के अन्दर आ कर आग के पास बैठ गयी और जल्दी जल्दी ऊन साफ करने लगी। अचानक वह बोली — "और स्त्रियॉ कहॉ हैं? उनको बहुत देर हो गयी।"

तभी किसी ने फिर दरवाजा खटखटाया और पहले की तरह से एक आवाज आयी — "खोलो खोलो, दरवाजा खोलो।"

[10] Witches with Horns – a folktale of Ireland, Europe

घर की स्त्री मशीन की तरह उठी और जा कर घर का दरवाजा खोल दिया। एक दूसरी जादूगरनी घर में घुसी। उसके हाथ में चरखा था और सिर पर दो सींग थे।

वह आते ही बोली — "मुझे बैठने के लिये जगह चाहिये। मैं दो सीगों वाली जादूगरनी हूँ।" वह पहली वाली जादूगरनी के पास जा कर बैठ गयी और उसने ऊन कातना शुरू कर दिया।

इस तरह दरवाजा दस बार खटखटाया गया और कई सींगों वाली जादूगरनियॉ अन्दर आती चली गयीं। पहली वाली जादूगरनी एक सींग की थी और आखिरी वाली बारह सींग की।

उन सबमें कोई ऊन साफ कर रही थी तो कोई ऊन कात रही थी, तो कोई उसकी पूली बना रही थी तो कोई उसे बुन रही थी।

काम करते समय वे कोई पुराना गाना गा रहीं थीं पर उनमें से कोई भी जादूगरनी घर की स्त्री से नहीं बोली। इन जादूगरनियों की आवाज बड़ी अजीब थी और सिर पर सींग उगे होने की वजह से ये सब देखने में भी बहुत डरावनी थीं।

घर की स्त्री को यह सब देख सुन कर बड़ा डर लग रहा था। उसको लग रहा था कि वह तो बस मर ही जायेगी। उसने उठ कर सहायता के लिये चिल्लाना भी चाहा परन्तु न तो वह हिल सकी और न ही किसी को पुकार ही सकी क्योंकि उन जादूगरनियों का जादू उसके ऊपर था।

इतने में एक जादूगरनी ने उससे कहा — "उठो और हमारे लिये एक केक बनाओ।"

घर की स्त्री पहले की तरह से एक मशीन की तरह उठी और कुँए से पानी लाने के लिये कोई बरतन ढूँढने लगी ताकि वह केक बनाने के लिये आटा गूँध सके और फिर केक बना सके पर उसको अपने घर में कोई बरतन ही दिखायी नहीं दिया।

जादूगरनी बोली — "यह चलनी रखी है इसी में पानी ले आओ।"

उस समय उस स्त्री की समझ में यही नहीं आया कि वह चलनी में पानी कैसे लायेगी। बस वह तो उठी, उसने पास पड़ी चलनी उठायी और कुँए की तरफ पानी लाने चल दी। जब वह पानी उस में भरने लगी तो उसमें तो उससे पानी ही नहीं भरा जा रहा था। वह वहीं कुँए के पास बैठ गयी और रोने लगी।

इतने में कोई उसके कान में फुसफुसाया — "वह पीली मिट्टी उठाओ और वह घास लो और दोनों को मिला कर चलनी के छेद बन्द करो तभी उसमें पानी भरा जा सकेगा।"

उसने ऐसा ही किया। तब कहीं जा कर उसमें केक बनाने के लिये पानी भरा जा सका।

इतने में वही आवाज फिर उसके कानों में फुसफुसायी — "जाओ, अब तुम वापस अपने घर जाओ और जब तुम अपने घर के उत्तरी मोड़ पर पहुँचो तो तीन बार ज़ोर से चिल्ला कर कहना —

"फैनियान की स्त्रियों के पहाड़[11] और उसके ऊपर का आसमान दोनों में आग लग गयी है।"

उसने ऐसा ही किया। उधर घर में बैठी जादूगरनियों ने जब यह सुना तो उनके मुँह से चीख निकल गयी और वे सब रोती चिल्लाती उस पहाड़ की तरफ भाग लीं।

पर इस बीच में उन जादूगरनियों ने उस स्त्री के जाने के बाद एक केक बनाया और उसके परिवार के लोगों के मुँह में रख दिया जिससे वे सब मर गये।

इधर उस कुँए की आत्मा[12] ने जिस कुँए से वह स्त्री पानी भरने गयी थी उस स्त्री को उन जादूगरनियों से अपना घर सुरक्षित करने के लिये कुछ किया ताकि वे जादूगरनियॉ अगर वापस भी लौटें तो उसके घर में अन्दर न घुस सकें।

इसके लिये सबसे पहले उसने अपने पानी से उसके बच्चे के पैर धोये। फिर उस पानी को दरवाजे की देहरी पर छिड़का।

फिर उसने जादूगरनियों ने घर की स्त्री के जाने के बाद जो केक बनाया था उसमें उसके सोते हुए परिवार का खून मिला कर उस केक के छोटे टुकड़े करके उसके परिवार के सब लोगों के मुँह में रख दिये जिससे वे सब ज़िन्दा हो गये।

[11] Mountain of the Women of Fenian

[12] Spirit of the Well

फिर उसने उन जादूगरनियों के बुने हुए कपड़े को आलमारी में आधा अन्दर और आधा बाहर रख दिया और आलमारी के दरवाजे को एक बड़े से लकड़ी के लट्ठे से बन्द कर दिया और उन जादूगरनियों का इन्तजार करने लगी।

जादूगरनियॉ जल्दी ही वापस लौट आयीं और गुस्से में भर कर बोलीं — "ओ पैरों के पानी, दरवाजा खोलो।"

पैरों का पानी बोला — "मैं यह दरवाजा नहीं खोल सकता, मैं तो जमीन पर बिखर चुका हूॅ और नीचे की तरफ बह रहा हूॅ।"

फिर वे दरवाजे से बोलीं — "जंगल, पेड़, लट्ठे, दरवाजा खोलो।"

दरवाजा बोला — "मैं तो हिल भी नहीं सकता क्योंकि मैं तो लट्ठे से बन्द हूॅ।"

वे फिर बोलीं — "खोलो खोलो, ओ केक जो हमने खून मिला कर बनाया था, दरवाजा खोलो।"

केक बोला — "मैं नहीं खोल सकता क्योंकि मुझे तोड़ दिया गया है और मेरा खून बच्चों के मुॅह पर है।"

यह सुन कर सब जादूगरनियॉ चीखती चिल्लाती और कुॅए की आत्मा को कोसती हुई अपने पहाड़ की तरफ भाग गयीं। इस तरह उस कुॅए की आत्मा ने उस स्त्री का घर बचाया।

जब सब जादूगरनियॉ भाग रहीं थीं तो भागते समय उनमें से एक जादूगरनी का शाल[13] गिर गया। वह उस घर की स्त्री ने उस रात की घटना की याद में अपने घर में टॉग लिया था। वह शाल पॉच सौ साल बाद आज भी उसके घर में सुरक्षित है।

[13] Translated for the word “Cloak: - it is a kind of overall cloth to cover one’s whole body. See its picture above.

संतों और पादरियों की कहानियॉ

आयरलैंड में संतों और पादरियों की अपनी एक अलग और बड़ी महत्वपूर्ण जगह है। वहॉ जगह जगह पर पवित्र कुॅए हैं। लोग उनके पास बैठ कर पूजा करते हैं और पत्थरों के छोटे छोटे ढेर बनाते हैं जो फैसले के दिन गिने जायेंगे और उन्हीं की पूजा भगवान स्वीकार करेंगे जिन्होंने वे ढेर बनाये हैं। ये उन्हीं की कहानियॉ हैं।

संतों के शरीर भी वहॉ एक आश्चर्यजनक चीज़ हैं। कहते हैं कि आयरलैंड में फ़ोर माइल वाटर[14] के पास संतों का एक बहुत बड़ा कब्रिस्तान था। किसी समय वह नदी के उस पार था पर किसी ने वहॉ किसी पापी को गाड़ दिया तो कहते हैं कि रातों रात उस पापी की कब्र को वहॉ अकेला छोड़ कर सारे संतों का कब्रिस्तान नदी के दूसरी तरफ उठ कर चला गया।

हालॉकि एक पापी की कब्र को वहॉ से हटाना आसान था पर संतों को तो अपना काम अपने तरीके से ही करना था न।

[14] Four-Mile-Water – a place in Ireland

3 पादरी की आत्मा[15]

पुराने समय में आयरलैंड में बड़े बड़े स्कूल थे जहॉ लोगों को हर तरीके की शिक्षा दी जाती थी और उस समय के वहॉ के गरीब से गरीब लोग भी आज के अच्छे पढ़े लिखे आदमियों से ज़्यादा जानते थे।

ऐसे ही समय में एक बच्चा अपनी होशियारी से सबको चकित किये दे रहा था। उसके गरीब माता पिता मेहनत मजदूरी करके अपना और अपने बच्चों का पेट पालते थे।

पर यह बच्चा पैसे से जितना गरीब था ज्ञान का उतना ही अमीर था। राजाओं और महाराजाओं के बच्चे भी उससे ज्ञान में आगे नहीं थे।

कई बार वह अपने मास्टरों को भी नीचा दिखा देता था क्योंकि वे जब भी कोई चीज़ उसे सिखाने की कोशिश करते वह उनको कुछ ऐसी बात बता देता जो उन्होंने पहले कभी नहीं सुनी होती।

उसकी सबसे बड़ी खासियत यह थी कि वह बहस में बहुत होशियार था। वह पहले काले को सफेद साबित करता और फिर जब दूसरे को इस बात का विश्वास हो जाता कि हॉ यह तो सफेद ही है तो फिर अपनी होशियारी से उसी सफेद को काला साबित कर देता था।

[15] Spirit of a Priest – a folktale of Ireland, Europe

जब वह बच्चा बड़ा हो गया तो उसके माता पिता उससे बहुत खुश रहते थे। उन्होंने सोच लिया कि वे उसको पादरी बनायेंगे और उन्होंने एक दिन उसको पादरी बना दिया। क्योंकि इतना अक्लमन्द आदमी उस समय पूरे आयरलैंड में कोई नहीं था इसलिये कोई उसका मुकाबला भी नहीं कर सकता था।

अगर कोई बिशप[16] भी उससे बात करने की कोशिश करता तो उसे तुरन्त ही पता चल जाता कि वह तो उसके आगे कुछ भी नहीं जानता।

उस समय में आजकल की तरह के स्कूल और मास्टर नहीं हुआ करते थे। चर्च के पादरी लोग ही लोगों को पढ़ाया करते थे और क्योंकि यह पादरी उस समय का सबसे अक्लमन्द पादरी था इसलिये बहुत सारे देशों के राजा अपने अपने बेटों को इस पादरी के पास पढ़ने के लिये भेजते थे।

धीरे धीरे इस पादरी में घमंड आने लगा और वह यह भी भूल गया कि वह क्या था और किसकी मेहरबानियों से आज इस जगह पहुँचा था। उसके अन्दर बहस करने की चतुरता का घमंड घर करता चला गया।

[16] Bishop – a high status man in Church

वह यह साबित करता चला गया कि न तो कहीं स्वर्ग है और न ही कहीं नरक है, न कहीं आत्मा है और न ही कहीं परगेटरी[17] ही है। यहॉ तक कि कहीं भगवान भी नहीं है।

वह हमेशा यह कहा करता था — "आत्मा को किसने देखा है? अगर तुम मुझे एक भी आत्मा दिखा दो तो मैं विश्वास कर लूँगा कि आत्मा है।"

लेकिन उस जैसे होशियार आदमी को यह कौन समझाता कि आत्मा को देखा नहीं जा सकता। और फिर सारे लोग यही मानने लग गये।

उसने शादी भी की पर उसकी शादी कराने वाला दुनियॉ भर में कोई पादरी ही नहीं मिला तो शादी की सब रस्में उसे खुद ही पूरी करनी पड़ीं।

लोग आपस में तरह तरह की बातें करते पर ऊपर से कोई कुछ नहीं कह सकता था क्योंकि सब राजाओं के लड़के उसी से पढ़ते थे और सब उसी का पढ़ाया बोलते थे।

वे सब तो उसी के चेले थे और उसी की बातों में विश्वास करते थे। वे सोचते थे कि वह जो कुछ कहता था ठीक ही कहता था। इस तरह दुनियॉ में बुराई फैलती जा रही थी।

[17] Purgatory - According to the Catholic Church doctrine, Purgatory is an intermediate state after physical death in which those destined for heaven "undergo purification, so as to achieve the holiness necessary to enter the joy of heaven.

कि एक रात स्वर्ग से एक देवदूत[18] आया और पादरी से बोला — "तुम्हारी ज़िन्दगी अब केवल चौबीस घंटों की और है।"

पादरी यह सुन कर कॉप गया और उसने देवदूत से उसे इस धरती पर रहने के लिये कुछ और ज़्यादा समय देने की प्रार्थना की परन्तु देवदूत अपनी बात का पक्का था इसलिये पादरी को उससे ज़्यादा समय नहीं मिल पाया।

फिर भी उस देवदूत ने उससे पूछा — "तुम जैसे पापी को और ज़्यादा समय क्यों चाहिये?"

पादरी ने दीनता भरी आवाज में कहा — "देवदूत, मुझ पर रहम करो, मुझ पर दया करो, मेरी आत्मा पर तरस खाओ।"

देवदूत ने मुस्कुरा कर पूछा — "तो तुम्हारी आत्मा भी है? परन्तु इस बात का तुमको पता कैसे चला कि तुम्हारी आत्मा भी है?"

पादरी बोला — "जबसे तुम मेरे सामने आये हो तभी से यह मेरे शरीर के अन्दर फड़फड़ा रही है। मैं भी कितना बेवकूफ था कि मुझे इसका पहले पता ही नहीं चला।"

"तुम सचमुच में बेवकूफ हो। तुम्हारे पढ़ने लिखने का क्या फायदा अगर तुम यही पता न चला सके कि तुम्हारी एक आत्मा भी है।" देवदूत बोला।

[18] Translated for the word "Angel"

पादरी बोला — "ओह मेरे भगवान, अच्छा यह बताओ मरने के कितनी देर बाद मैं स्वर्ग पहुँच जाऊँगा?"

देवदूत हँस कर बोला — "तुम स्वर्ग कभी नहीं पहुँचोगे क्योंकि तुम तो स्वर्ग को मानते ही नहीं।"

पादरी बोला — "क्या मैं परगेटरी जा सकता हूँ?"

देवदूत बोला — "पर तुम तो परगेटरी को भी नहीं मानते। तुम तो सीधे नरक जाओगे।"

अबकी बार पादरी के हँसने की बारी थी। वह बोला — "पर मैं तो नरक को भी नहीं मानता इसलिये तुम मुझे वहाँ भी नहीं भेज सकते।"

यह सुन कर देवदूत कुछ परेशान सा हुआ और बोला — "मैं बताता हूँ कि मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूँ। तुम अगर चाहो तो अभी धरती पर सौ साल तक और रह सकते हो और सभी खुशियों को भोग सकते हो, या फिर चौबीस घंटों के बाद तकलीफ के साथ मर सकते हो।

मैं तुमको परगेटरी ले जाऊँगा फैसले के दिन[19] तक का इन्तजार करने के लिये। पर इस बीच अगर तुमको कोई ऐसा आदमी मिल जाता है जो भगवान में विश्वास करता हो, स्वर्ग नरक में विश्वास

[19] Translated for the words "The Day of Judgment". In Christianity it is believed that there will be a Day of Judgment also called "The Judgment Day", or "Final Judgment", or "The Day of the Lord" etc is the day in every nation resulting in the glorification of some and the punishment of others.

रखता हो, तो तुम्हारी ज़िन्दगी कुछ सुधर सकती है।" यह कह कर वह देवदूत वहॉ से गायब हो गया।

पादरी को निश्चय करने में पॉच मिनट भी नहीं लगे। उसने सोच लिया था कि उसे क्या करना था। चौबीस घंटे तो उसके लिये बहुत होते थे वह करने के लिये जो देवदूत ने उसको बताया था।

वह तुरन्त ही एक बहुत बड़े कमरे में पहुॅचा जहॉ उसके बहुत सारे चेले और राजाओं के लड़के बैठे थे। उसने उनसे कहा कि तुम सब लोग सब सच बोलना। तुम लोग मेरे खिलाफ बोल रहे हो इस बात से ज़रा भी नहीं डरना। यह बताओ कि तुम्हारा क्या विश्वास है कि आदमी के आत्मा होती है क्या?

वे बोले — "मास्टर जी, पहले तो हम लोग मानते थे कि आदमी के अन्दर आत्मा होती है परन्तु अब जबसे हमने आपसे पढ़ा है कि कहीं कोई आत्मा नहीं है तबसे हम इसमें विश्वास नहीं करते। अब तो कहीं कोई स्वर्ग नहीं है, कहीं कोई नरक नहीं है और कहीं कोई भगवान भी नहीं है, यही आपने हमें सिखाया है।"

पादरी डर के मारे पीला पड़ गया और ज़ोर से बोला — "देखो, मैंने तुम लोगों को जो कुछ भी सिखाया था वह गलत था। भगवान है और एक अमर आत्मा भी है। पहले मैं जिनमें विश्वास नहीं करता था आज उनको मैं मानता हूॅ।"

वहाँ बैठे सभी लोग ज़ोर ज़ोर से हँस पड़े क्योंकि वे समझे कि उनका मास्टर उनको बहस करने के लिये उकसा रहा है। सो वे भी ज़ोर से चिल्लाये — "साबित कीजिये, साबित कीजिये। भगवान को किसने देखा है और आत्मा को भी किसने देखा है?" और कमरा एक बार फिर ठहाकों से भर गया।

पादरी कुछ कहने के लिये उठा और उसने कुछ कहा भी पर सब कुछ उन ठहाकों के शोर में दब कर रह गया। वह चिल्लाता रहा — "भगवान है, आत्मा भी है, स्वर्ग भी है और नरक भी है।" परन्तु किसी ने उसकी एक न सुनी।

उसने सोचा कि शायद उसकी पत्नी उसका विश्वास कर लेगी परन्तु उसने कहा कि वह भी उसी की सिखायी हुई बातों को मानती है। और ऐसा एक पत्नी को करना भी चाहिये क्योंकि पति पत्नी के लिये भगवान से भी ऊँचा होता है।

इसको सुन कर तो वह बहुत निराश हो गया और घर घर जा कर पूछने लगा कि क्या वे भगवान में विश्वास करते थे। पर सबसे उसको एक ही जवाब मिला "हम तो उसी में विश्वास करते हैं जो आपने हमें सिखाया है।"

अब तो पादरी डर के मारे बिल्कुल पागल सा हो गया क्योंकि समय बीतता जा रहा था और उसको कोई एक भी आदमी भगवान में विश्वास करने वाला नहीं मिल रहा था।

वह अकेला ही एक कमरे में जा कर बैठ गया और रोने लगा। कभी कभी डर के मारे वह चिल्ला पड़ता क्योंकि उसके मरने का समय पास आता जा रहा था।

इतने में एक बच्चा आया और बोला — "भगवान तुम्हारी रक्षा करे।"

बच्चे के ये शब्द सुनते ही पादरी में जान आ गयी। उसने तुरन्त बच्चे को गोद में उठा लिया और उतावली से उससे पूछा — "बेटा क्या तुम भगवान को मानते हो?"

बच्चा बोला — "मैं यहॉ उसी के बारे में जानने के लिये तो आया हूँ। क्या आप मुझे यहॉ का सबसे अच्छा स्कूल बतायेंगे?"

पादरी बोला — "सबसे अच्छा स्कूल और सबसे अच्छा मास्टर तो तुम्हारे पास ही है बेटा।" यह कह कर उसने उसको अपना नाम बता दिया।

बच्चा बोला — "नहीं नहीं, मैं इस आदमी के पास नहीं जाना चाहता क्योंकि मैंने सुना है कि वह भगवान को नहीं मानता, स्वर्ग और नरक को भी नहीं मानता।

यहॉ तक कि अपने शरीर में रह रही आत्मा को भी वह नहीं मानता क्योंकि वह उसको देख नहीं सकता। परन्तु मैं उसको बहुत जल्दी नीचा दिखा दूँगा।"

पादरी को उस बच्चे की बात सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ। उससे रहा नहीं गया तो उसने उससे पूछ ही लिया — "तुम उसको कैसे नीचा दिखाओगे बेटा?"

बच्चा बोला — "यह तो बड़ा आसान है। मैं उससे कहूँगा कि अगर तुम ज़िन्दा हो तो तुम अपना ज़िन्दा रहना साबित करो।"

पादरी बोला — "पर बेटे वह ऐसा कैसे कर सकता है? क्योंकि सभी जानते हैं कि वे ज़िन्दा हैं पर वे उसे दिखा तो नहीं सकते क्योंकि उसको देखा नहीं जा सकता।"

इस पर बच्चा बोला — "सो अगर हमारे अन्दर ज़िन्दगी है और हम उसे केवल इसलिये नहीं दिखा सकते क्योंकि वह छिपी हुई है तो हमारे अन्दर आत्मा भी तो हो सकती है जिसको हम केवल इसी लिये नहीं दिखा सकते क्योंकि वह हमारे अन्दर इसी तरह छिपी हुई हो।"

पादरी ने जब उस बच्चे के मुँह से ऐसे शब्द सुने तो उसने उसके सामने अपने घुटने टेक दिये और रो पड़ा क्योंकि अब उसे विश्वास हो गया था कि उसकी आत्मा अब सुरक्षित है।

कम से कम एक आदमी तो उसको भगवान में विश्वास रखने वाला मिला और उसने उस बच्चे को शुरू से ले कर आखीर तक की अपनी सारी कहानी सुना दी।

फिर बोला — "लो बेटे यह चाकू लो और इससे मेरी छाती को गोद दो और गोदते रहो जब तक तुम्हें मेरे चेहरे पर मौत का पीलापन नजर न आ जाये। फिर ध्यान से देखना जब मैं मरूँगा तो

मेरे शरीर से एक ज़िन्दा चीज़ निकलेगी। उससे तुमको पता चल जायेगा कि मेरी आत्मा भगवान के पास पहुँच गयी है।

और जब तुम यह देखो तो तुम तुरन्त भाग कर मेरे स्कूल जाना और मेरे सभी शिष्यों को यह देखने के लिये बुला लाना। उनको बताना कि जो कुछ भी मैंने उनको ज़िन्दगी भर सिखाया वह सब गलत था क्योंकि कहीं भगवान है जो पापों की सजा देता है। स्वर्ग भी है और नरक भी है और हर आदमी के पास एक अमर आत्मा भी है।"

बच्चा बोला —"मैं कोशिश करूँगा।" कह कर वह बच्चा घुटनों के बल बैठ गया। पहले उसने प्रार्थना की फिर चाकू उठाया और पादरी की छाती में मारा और तब तक मारता रहा जब तक उसकी छाती का मॉस चिथड़े चिथड़े नहीं हो गया।

परन्तु इतना सब होने के बावजूद भी पादरी मरा नहीं। हालॉकि उसको दर्द बहुत था पर चौबीस घंटे पूरे होने से पहले वह नहीं मरा। आखिर उसके चेहरे पर मौत का पीलापन झलकने लगा।

उसी समय बच्चे ने देखा कि एक छोटी सी कोई ज़िन्दा चीज़, चार सफेद पंखों वाली, पादरी के शरीर से निकली और उसके सिर पर मॅडराने लगी।

वह तुरन्त उसके शिष्यों को उनके मास्टर की आत्मा दिखाने के लिये बुला लाया। उन्होंने भी उसको तब तक देखा जब तक वह उड़ कर बादलों के उस पार नहीं चली गयी।

आयरलैंड की यह सबसे पहली तितली थी और आज वहाँ सब यह जानते हैं कि तितलियों में मरे हुए लोगों की आत्मा होती है और उस रूप में दर्द सहती हुई शान्ति पाने के लिये परगेटरी में घुसने का इन्तजार करती रहती हैं।

शैतानों की कहानियॉ

4 काउन्टैस कैथलीन ओशी[20]

यह बहुत पुरानी बात है कि आयरलैंड में अचानक ही पुराने आयरलैंड के दो अनजान व्यापारी देखे गये। उनके बारे में न तो किसी ने पहले कभी सुना था और न किसी ने पहले कभी उनको देखा था पर वे वहॉ की भाषा बहुत अच्छी तरह बोल रहे थे।

दोनों ही की उमर करीब करीब पचास साल थी। दोनों ही बड़ी शान्ति से अपनी ज़िन्दगी बिता रहे थे। वे वहॉ पर अपनी अपनी थैलियों में रखे पीले पीले सोने के सिक्के गिनने के अलावा और कोई काम नहीं करते थे।

एक दिन उनकी मकान मालकिन ने उनसे कहा — "भलेमानसों, ऐसा कैसे है कि आप लोग इतने अमीर हैं फिर भी आप लोग कोई भला काम नहीं करते। किसी को कुछ देते नहीं हैं।"

उनमें से एक बोला — "बात तो आप ठीक कहती हैं परन्तु हम खुद किसी को दान देना नहीं चाहते क्योंकि कहीं ऐसा न हो कि कोई बहाना बना कर हमको धोखा दे दे। परन्तु अगर कोई गरीब हमारा दरवाजा खटखटायेगा तो हम उसे जरूर कुछ न कुछ दे देंगे।"

[20] Countess Kathleen Oshi – a folktale of Ireland, Europe

बस फिर क्या था अगले ही दिन यह अफवाह फैल गयी कि शहर में दो अजनबी अमीर आये हैं और अपना सोना बॉटना चाहते हैं। सो उनके दरवाजे पर सोना लेने वालों की लाइन लग गयी।

उन दोनों ने शैतान के लिये लोगों की आत्माएँ खरीदनी शुरू कर दीं। एक बूढ़े की आत्मा का दाम बीस सोने के सिक्के था और एक कुँआरी लड़की की आत्मा तो बहुत ही मँहगी थी।

उन्हीं दिनों उस शहर में एक काउन्टैस कैथलीन ओशी[21] रहती थी। वह बहुत सुन्दर थी और लोग उसको बहुत प्यार करते थे क्योंकि वह बहुत ही दयालु थी।

जैसे ही उसने यह सब सुना कि ये दो लोग भगवान से उसकी आत्माएँ खरीद रहें हैं तो उसने अपने बटलर यानी नौकर को बुलाया और उससे पूछा — "पैट्रिक[22], मेरे खजाने में सोने के कितने सिक्के हैं?"

पैट्रिक बोला — "एक लाख।"

"और रत्न?"

पैट्रिक बोला — "वह भी उतने ही दाम के हैं।"

कैथलीन ने फिर पूछा — "और मेरी जायदाद, किले, जंगल, जमीन?"

---

[21] Countess Kathleen Oshi - Countess – Count (male) or countess (female) is a title in European countries for a noble of varying status, but historically deemed to convey an approximate rank intermediate between the highest and lowest titles of nobility.

[22] Patrick – name of the butler of the Countess

पैट्रिक बोला — "वे दोनों के दुगुने दाम के हैं।"

कैथलीन बोली — "ठीक है पैट्रिक, तुम मेरे सोने के सिक्कों के अलावा मेरा सब कुछ बेच दो और मुझे बताओ कि वह सब कितने का बिका। बस मेरा यह घर और इसके चारों तरफ की जमीन छोड़ देना।"

दो दिन के बाद कैथलीन के हुकुम से सारा पैसा गरीबों में उनकी जरूरतों के अनुसार बॉट दिया गया। यह बात उन शैतानों को अच्छी नहीं लगी क्योंकि अब वे आत्माएँ नहीं खरीद पा रहे थे।

सो एक नौकर की सहायता से वे दोनों उस काउन्टैस के घर में घुस गये और उसका बाकी बचा पैसा चुरा लिया। हालॉकि काउन्टैस ने उन दोनों को रोकने की बहुत कोशिश की पर कामयाब न हो पायी।

कहते हैं कि उसने कई बार क्रास बनाने की कोशिश की परन्तु उसके हाथ जैसे बॅध गये थे और वह फिर उन गरीबों की सहायता भी न कर सकी।

करीब आठ दिन के बाद देश के पश्चिमी हिस्से से अनाज आया। पर ये आठ दिन लोगों को आठ युग की तरह दिखायी दिये। इन आठ दिनों के लिये गरीबों के लिये बहुत सारे पैसों की जरूरत थी और कैथलीन के पास अब कुछ था नहीं सो वह बहुत परेशान रही।

उसने कुछ सोचा और उन आत्माओं के व्यापारियों के पास पहुँची। उन्होंने उससे पूछा — "तुमको क्या चाहिये?"

कैथलीन बोली — "तुम लोग आत्माएँ खरीदते हो?"

वे बोले "हाँ"।

कैथलीन बोली — "देखो, मैं तुमसे एक सौदा करने आयी हूँ। मेरे पास एक आत्मा है जो बहुत कीमती है और वह मेरी आत्मा है।"

कैथलीन की यह बात सुन कर दोनों व्यापारियों को बड़ा आश्चर्य हुआ। उनकी मुट्ठियाँ भिंच गयीं और उनकी आँखों में चमक आ गयी। वे बड़े खुश थे कि उनको कैथलीन की आत्मा मिल रही थी।

उन्होंने उससे पूछा — "ओ सुन्दर लड़की, बोल कितना माँगती है अपनी आत्मा के लिये?"

कैथलीन बोली — "पन्द्रह लाख सोने के सिक्के।"

वे बोले "चल, दिये।" और यह कह कर उन्होंने उसके आगे एक काली मुहर लगी खाल बढ़ा दी जिस पर उसने काँपते हाथों से दस्तखत कर दिये। पैसा उसको दे दिया गया।

घर पहुँचते ही उसने पैट्रिक को बुलाया और कहा — "देखो ये पैसे लो और आठ दिन तक इनको गरीबों में थोड़ा थोड़ा बाँटो और आज के बाद अब एक भी आत्मा उन शैतानों को नहीं बेची

जायेगी।" कह कर वह एक कमरे में बन्द हो गयी और सबको यह कह दिया कि कोई आ कर उसको तंग न करे।

तीन दिन बीत गये, न तो उसने किसी को बुलाया और न वह खुद ही बाहर निकली। जब दरवाजा खोला गया तो उसकी ठंडी और अकड़ी हुई लाश मिली।

परन्तु उसकी आत्मा के सौदे को भगवान ने नहीं माना क्योंकि उसकी आत्मा ने अपनी जनता को उस तरह की गन्दी मौत से बचाया था।

आठ दिन बीत जाने के बाद तो वहॉ पर काफी खाने पीने का सामान आ गया। सब लोग खुशहाल हो गये। उधर वे आत्माओं के व्यापारी भी न जाने कहॉ चले गये परन्तु ब्लैकवाटर[23] के लोगों को अभी भी यह लगता है कि लूसीफ़र[24] ने अभी भी उनकी आत्माओं को बॉध रखा है जब तक कि वे कैथलीन की आत्मा उसे वापस नहीं कर देते।

[23] Blackwater – a place in Ireland

[24] Lucifer - Lucifer word occurs only once in the Hebrew Bible. There it meant the “Morning Star”. Later Christian tradition came to use the Latin word for "morning star", lucifer, as a proper name ("Lucifer") for the devil; as he was before his fall. As a result, “Lucifer” has become a by-word for Satan/the Devil in the church.

5 तीन इच्छाऐं[25]

बहुत पुरानी बात है कि एक गॉव में एक आदमी रहता था जिसका नाम बिल्ली डाउसन[26] था। वह सब लोगों को बहुत तंग करता था और पूरे यूरोप में वह अपनी सुस्ती के लिये मशहूर था।

बिल्ली अपने माता पिता का अकेला बेटा था और यह सुस्ती उसको अपने माता पिता से विरासत में मिली थी। फिर उसके पिता ने उसको एक लोहार के यहॉ काम दिलवा दिया पर वह लोहार भी बिल्ली से बहुत तंग था।

कुछ सालों बाद बिल्ली बड़ा हो गया। उसकी शादी हो गयी। किस्मत से उसको उसकी पत्नी भी उसके बराबर की ही मिल गयी।

अगर वह सुस्त था तो वह भी उससे कम सुस्त नहीं थी, अगर वह उससे लड़ता था तो वह भी उससे खूब लड़ती थी। ऐसा जोड़ा पहले कभी किसी ने न देखा था और न सुना था। जल्दी ही उन दोनों की चर्चा गॉव भर में फैल गयी।

लोग उसे सुबह सुबह ही पिये हुए पाते। उसकी कमीज की बॉहें मुड़ी होतीं, उसके आगे के बटन खुले रहते। इस पल वह गा रहा होता तो अगले पल वह अपनी पत्नी से झगड़ रहा होता।

[25] Three Wishes – a folktale of Ireland, Europe

[26] Billy Dawson – name of a man

उसकी पत्नी उसके चारों तरफ चक्कर काट रही होती। उसके सिर पर कहीं एक फटा सा गन्दा सा टोप होता, पैरों में बिल्ली के पुराने स्लिपर होते, गोद में रोता हुआ बच्चा होता। कभी वह बिल्ली को खींच रही होती तो कभी उसे प्यार कर रही होती।

मन को लुभाने वाली ऐसी सुन्दर घटनाएँ उस घर में अक्सर ही देखने को मिल जातीं।

एक दिन सुबह सुबह बिल्ली अपने घर की दीवार के सामने खड़ा था और सोच रहा था कि परिवार के लिये नाश्ते का इन्तजाम कैसे किया जाये।

उसकी पत्नी नीचे जमीन पर बैठी बच्चों को सँभालती उसको खाने के लिये चिल्ला रही थी। बिल्ली की समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। कहाँ से लाये खाना?

इतने में एक बूढ़ा दुबला पतला भिखारी एक डंडे के सहारे चलता हुआ वहाँ आया। उसकी सफेद दाढ़ी काफी नीचे तक लटक रही थी और वह बहुत भूखा दिखायी दे रहा था।

बिल्ली उसको देख कर कुछ होश में आया और उसको उसके ऊपर कुछ तरस भी आया। वह बोला — "भगवान तुम्हारी रक्षा करें।"

भिखारी ने पलट कर कहा — "भगवान तुम्हारी मदद करे। इस बूढ़े को कुछ खाने को दे दो। तुम देख रहे हो कि मैं काम नहीं कर सकता इसी लिये मैं तुमसे माँगता हूँ।"

बिल्ली बोला — "अगर तुमको मालूम होता कि तुम किससे मॉग रहे हो तो शायद तुम्हें पता चलता कि जैसे तुम किसी डंडे से कुछ मॉग रहे हो।

मेरे घर में तो मेरे खुद के खाने को लिये कुछ नहीं है। मेरी पत्नी मुझे बुरा भला कह रही है और मेरे बच्चे उसे रो रो कर तसल्ली देने की कोशिश रहे हैं। तुम सच मानो अगर मेरे पास खाना या पैसा कुछ भी होता तो मैं तुम्हारी मदद जरूर करता।"

भिखारी बोला — "अरे, तुम तो मुझसे भी बुरी हालत में हो क्योंकि तुम्हारे पास तो खिलाने पिलाने के लिये एक परिवार भी है। कम से कम मेरे ऊपर यह जिम्मेदारी तो नहीं है। मै तो अकेला ही हूॅ।"

बिल्ली बोला — "फिर भी तुम घर में आओ और मुझे बताओ कि मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूॅ? तुम यहॉ आग के पास बैठो। आज बड़ा बरफीला दिन है, तुमको इस आग से थोड़ी गरमी मिलेगी।"

बूढ़ा भिखारी घर के अन्दर आ गया और आग के पास बैठता हुआ बोला — "हॉ आज का दिन बहुत ही ठंडा है। यह आग मुझे बहुत ही अच्छी लग रही है।"

थोड़ी देर तक वह भिखारी आग के पास बैठा रहा फिर वह चलने के लिये खड़ा हो गया और बिल्ली से बोला — "तुमने मुझे खाना तो खाने के लिये दिया नहीं पर जो कुछ तुम मुझे दे सकते थे

वह तुमने मुझे दिया। इसके बदले में तुम मुझसे अपनी कोई भी तीन इच्छाऐं पूरी करवा सकते हो।"

अब सच तो यह था कि बिल्ली अपने आपको बहुत ही अक्लमन्द समझता था परन्तु ऐसे समय में तो उसकी समझ में कुछ नहीं आया और वह वहीं सिर खुजलाता खड़ा रहा। उसकी समझ में यही नहीं आ रहा था कि वह उससे अपनी कौन सी तीन इच्छाऐं पूरी करवाये।

बूढ़ा बोला — "तुम जल्दी ही मॉग लो क्योंकि मेरे पास ज़्यादा समय नहीं है और मैं ज़्यादा समय तक यहॉ रुक भी नहीं सकता।"

बिल्ली बोला — "अच्छा ठीक है तो सुनो। यह जो मेरे स्ले[27] का हथौड़ा तुम देख रहे हो न?

मेरी पहली इच्छा यह है कि इसको जो कोई भी अपने हाथ में उठा ले यह तब तक उसके हाथ में से न छूटे जब तक मैं न चाहूँ। और अगर वह इसको स्ले पर चलाने लगे तो यह तब तक न रुके जब तक मैं उसको रुकने को न बोलूँ।"

बिल्ली फिर बोला — "मेरी दूसरी इच्छा यह है कि मेरे पास एक आराम कुरसी है। उस कुरसी पर

[27] Sleigh – a wheelless snow vehicle which is used by the people living in icy regions. It just slips on the ice and normally is drawn by powerful dogs or horses. See its picture above

जो कोई भी बैठ जाये वह बिना मेरी इच्छा के उस पर से न उठ सके।

और मेरी तीसरी इच्छा यह है कि जो कुछ पैसे मैं अपने बटुए में रखूँ वह मेरे सिवा उसमें से और कोई न निकाल सके।"

ऐसी इच्छाएँ सुन कर बूढ़े को गुस्सा आ गया। वह बोला — "तुम्हारी नीयत अच्छी नहीं है। तुमने मुझसे कोई ऐसी चीज़ क्यों नहीं माँगी जो तुम्हारी यह दुनियाँ और दूसरी दुनियाँ दोनों ही सुधार देती?"

बिल्ली अपने माथे पर हाथ मारता हुआ बोला — "ओह यह तो मैं भूल ही गया था। क्या तुम मेरी एक इच्छा को बदलने दोगे? एक मौका मुझे और दो न बस एक मौका और।"

बूढ़ा बोला — "नहीं, तुम बहुत नीच हो। तुम्हारे भले दिन गुजर चुके हैं। तुम जानते ही नहीं कि अब तक तुमसे कौन बात कर रहा था।

मेरा नाम सेन्ट मोरोकी[28] है। मैंने तुमको एक मौका दिया था कि तुम अपने और अपने परिवार के लिये कुछ कर सको परन्तु तुमने कुछ ध्यान ही नहीं दिया।

अब वह सब तुम्हारी किस्मत में नहीं है। इसी लिये तुम इतने मशहूर हो। तुम अगर अब मेरे सामने भी आये तो मैं तुमको ऐसी

[28] Saint Moroky – a Saint

जगह भेज दूँगा जहाँ तुम शान्ति से मर भी नहीं पाओगे।" और गुस्से में भरा वह बूढ़ा अपने पैर पटकता हुआ वहाँ से चला गया।

कुछ पल बाद जब बिल्ली को होश आया तो वह बड़ा पछताया कि उसने एक इच्छा में बहुत सारी दौलत उस बूढ़े से क्यों नहीं माँग ली। पर अब क्या हो सकता था अब तो उसे अपनी इन तीन इच्छाओं के वरदान से ही सब कुछ हासिल करना था।

वह सोचता रहा, सोचता रहा तो उसके दिमाग में एक तरकीब आयी और उसने अपने शहर के सबसे अमीर आदमी को बुला भेजा कि वह उससे कुछ बिज़नेस करना चाहता है। जब वह आया तो उसने उसको आदर सहित अपनी आराम कुरसी पर बिठा दिया।

अब बिल्ली सुरक्षित था क्योंकि अब वह अमीर आदमी बिना उसकी मरजी के उस कुरसी से उठ ही नहीं सकता था और उसको उस कुरसी पर से उठने के लिये काफी पैसा देना पड़ा।

ऐसा उसने वहाँ के काफी अमीर लोगों के साथ किया। वहाँ के सभी लोग उससे परेशान हो गये थे। परन्तु यह सब कुछ ही दिनों तक रहा क्योंकि उसकी कुरसी वाली बात जल्दी ही चारों तरफ फैल गयी और लोगों को उसकी चालाकी का पता चल गया।

इसके बाद उसने अपनी स्ले के हथौड़े वाला वरदान का इस्तेमाल किया तो उसकी स्ले वाली बात भी चारों तरफ फैल गयी तो क्या आदमी क्या औरत, क्या बूढ़ा और क्या बच्चा सभी ने उसके घर आना छोड़ दिया।

इस तरह से उसे अपनी आराम कुरसी से पैसे मिलने भी बन्द हो गये और उसका बटुआ भी खाली होता चला गया।

इन सब बातों के साथ साथ उसका चाल चलन भी खराब होता चला गया। घर में फिर से हर समय झगड़ा रहने लगा। हर कोई उससे नफरत करता, उसको बुरा भला कहता और उससे बचने की कोशिश करता।

एक दिन बिल्ली ऐसे ही घूम रहा था और सोच रहा था कि ऐसी दशा से कैसे छुटकारा पाया जाये कि उसने अपने आपको कुछ घनी झाड़ियों के बीच खड़ा पाया।

उसने सोचा कि जब पैसे मिलने के सारे रास्ते बन्द हो चुके हैं तो शैतान से ही कुछ क्यों न कमाया जाये सो वह ज़ोर से बोला — "ओ निक[29], ओ पापी, अगर तुम्हारी इच्छा है तो तुम सामने आओ, मैं तुम्हारे सामने खड़ा हूँ।"

इन शब्दों के उसके मुँह से निकालने की देर थी कि एक वकील जैसा सॉवला भला आदमी उसके सामने आया। बिल्ली ने उसके पैरों की तरफ देखा तो उनमें उसे खुर दिखायी दिये। यानी कि वह शैतान ही था।

बिल्ली बोला — "नमस्ते।"

निक बोला — "नमस्ते, कहो बिल्ली क्या खबर है?"

[29] Nick – another name of Satan. It is the colloquial word for Satan.

बिल्ली बोला — "मुझे पैसे चाहिये और मैं उसके लिये सौदा करने के लिये तैयार हूँ।"

निक बोला — "पर अगर मैं तुमको बेचूँगा भी तो मुझको क्या मिलेगा?"

बिल्ली बोला — "अगर मेरी और तुम्हारी दोनों की नीलामी लगायी जाये तो देख लेना कि लोग मेरे लिये ही ज़्यादा पैसा देंगे।"

निक बोला — "खैर, छोड़ो इन बातों को। पर अगर तुम सात साल तक मेरा रहने का वायदा करो तो मैं तुमको इतना सारी दौलत दे सकता हूँ जिसके तुम लायक भी नहीं हो।"

बिल्ली बोला — "ठीक है। पर पहली बात यह कि मेरे परिवार से तुम्हारा कोई लेना देना नहीं होगा। और दूसरी बात यह कि मैं पैसा नकद लूँगा।"

निक ने बिल्ली को पैसे गिन कर दे दिये। अब क्योंकि वहाँ कोई भी नहीं था इसलिये निक ने बिल्ली को कितने पैसे दिये यह तो पता नहीं चल सका।

पर निक पैसे गिनने के बाद बोला — "क्या तुम मुझे लकी पैनी नहीं दोगे?"

बिल्ली बोला — "उँह, तुम इतने अमीर हो कि तुमको उसकी जरूरत ही नहीं है। भगवान करे तुम बदकिस्मत रहो और हाँ अब तुम यहाँ से दफा हो। कोई भी तुम्हारा साथ पसन्द नहीं करता। अपने साथ से तो तुमने मुझे भी बिगाड़ दिया है।"

निक बोला — "बिल्ली क्या यही तुम्हारी वफादारी है?"

"अच्छा अच्छा अब तुम यहॉ से दफा हो जाओ।" कहता हुआ बिल्ली एक तरफ को चला गया और निक भी यह सुन कर दूसरी तरफ चला गया।

अब क्या था कुछ ही समय में बिल्ली एक बहुत बड़ा आदमी बन गया। जो लोग पहले कभी उससे बचते फिरते थे अब उसके दरवाजे पर आ कर नाक रगड़ते थे। इस बात को सोच कर ही वह मन ही मन बहुत खुश होता था।

पर इतना अमीर हो जाने के बाद भी उसके रहने सहने के ढंग में कोई फर्क नहीं आया था। तीन साल बाद उसके पास गाड़ी थी, शिकारी थे। वह अब जुआ भी खेलने लग गया था। घोड़ों पर दॉव भी लगाने लग गया था।

पर इन सबको एक दिन तो जाना ही था। दो साल बाद यह सब धीरे धीरे कम होना शुरू हो गया। लोग उसके पास से हटने लगे। शिकारी, गाड़ी सभी कुछ खत्म होने लगा। बटुए में पैसे कम रहने लगे और फिर एक दिन ऐसा आया जब उसको फिर से अपना चमड़े का ऐप्रन पहन कर हथौड़ा उठा लेना पड़ा।

कोई भी हालात उसको कुछ भी नहीं सिखा पा रहे थे सो वह अपने पुराने काम पर वापस आ गया था। यानी पत्नी से लड़ाई पर वापस आ गया था।

एक दिन वे सात साल भी खत्म हो गये और एक सुबह बिल्ली और उसका परिवार फिर से भूखा बैठा हुआ था। उसकी पत्नी उस पर चिल्ला रही थी और बच्चे भूखे रो रहे थे।

वह यह सोच ही रहा था कि किस तरह वह अपने किसी पड़ोसी को धोखा दे कर सुबह के नाश्ते का इन्तजाम करे कि निक अपना सौदा पूरा करने उसके सामने आ खड़ा हुआ।

निक बोला — "नमस्ते बिल्ली।"

बिल्ली बोला — "ओ शैतान आओ आओ। पर मानना पड़ेगा तुम्हारी याद बहुत अच्छी है।"

निक बोला — "भाई, ईमानदारों के बीच सौदा तो सौदा ही होता है। जब मैं ईमानदारों की बात करता हूँ तो उससे मेरा मतलब है अपने आपसे और तुमसे।"

बिल्ली बोला — "निक, तुम मेरे साथ कोई गन्दी हरकत नहीं करोगे। तुम मुझ जैसे गिरे हुए आदमी के ऊपर और ज़्यादा बोझा नहीं डालोगे। तुम जानते हो कि इस तरह नीचे आने का क्या मतलब होता है इसलिये अच्छा हो अगर तुम यहाँ से दफा हो जाओ।"

निक बोला — "इतना नाराज होने से कोई फायदा नहीं बिल्ली। तुम्हारी ये चालाकियाँ किसी और को धोखा देने के लिये तो ठीक हैं परन्तु मुझे तुम इन चालाकियों से नहीं बहका सकते। तुमको मेरे साथ दूसरे देशों में भी जाना होगा।"

बिल्ली बोला — "ठीक है। तुम यह स्ले वाला हथौड़ा लो और ज़रा मेरे इस घोड़े की नाल[30] बना कर तैयार करो मैं तब तक तैयार हो कर और अपनी पत्नी और बच्चों से मिल कर आता हूँ।"

यह कह कर बिल्ली कनखियों से उसकी तरफ देखता हुआ बाहर की तरफ चला गया। वह अपने मन में कहता जा रहा था "मैंने अच्छे अच्छों को सीधा कर दिया है तुम क्या चीज़ हो निक जी।"

इधर निक ने जैसे ही वह हथौड़ा हाथ में पकड़ा तो वह तो उस हथौड़े से जैसे चिपक ही गया। अब वह उसे अपने आप छोड़ना चाह कर भी नहीं छोड़ पा रहा था।

उधर बिल्ली एक महीने के बाद चारों तरफ घूम घाम कर आया तो उसने देखा कि शैतान गुस्से में भरा पसीने में तर बतर उसका स्ले का हथौड़ा चलाये ही जा रहा है चलाये ही जा रहा है।

बिल्ली ने बड़ी शान्ति से उससे कहा — "गुड मौर्निंग निक।"

निक हथौड़ा चलाते हुए बोला — "तुम तो बड़े ज़ोर का धोखा देने वाले निकले। तुमको तो धोखेबाजों का राजा कहा जाना चाहिये।"

बिल्ली फिर बोला — "निक तुम बहुत अच्छे हो। पर यह तो तुम अपनी मरजी से बैठे थे। मैंने तुमको खाली हथौड़ा चलाने के लिये तो नहीं कहा था। फिर मुझे काम करने वाले लोग पसन्द हैं

[30] Translated for the word "Horseshoe"

इसलिये तुम अपना काम जारी रखो। और फिर तुमको काम करने का मौका ही कहॉ मिलता होगा। आज मिला है तो थोड़ा काम कर लो।"

निक बोला — "बिल्ली थोड़ा तरस खाओ। तुम तो गिरते आदमी के ऊपर और बोझा नहीं डालते हो। तुम तो बहुत ही दयावान हो। बिल्ली मुझे इस हथौड़े से छुड़ाओ।"

बिल्ली बोला — "अच्छा तो मुझे उतना ही पैसा सात साल के लिये फिर से दे दो जितना तुमने मुझे पहले दिया था।"

"हॉ हॉ जो भी तुम कहो।"

बिल्ली ने निक को छोड़ दिया और निक उसको फिर से पैसे दे कर चला गया। अब बिल्ली फिर से अमीर हो गया और लोग फिर से उसके पास आने लगे।

सात साल गुजरते कितनी देर लगती है। सात साल शुरू हुए और चले गये। बिल्ली का सारा पैसा फिर खतम हो गया था। सात साल बाद बिल्ली फिर से गरीब हो गया था।

पर इतने समय ने उसको कम से कम यह सिखा दिया था कि आदमी को केवल अपनी मेहनत पर ही भरोसा करना चाहिये केवल दिये हुए पैसे पर नहीं। सो उसने एक नौकरी कर ली।

पर एक सुबह फिर पति पत्नी में फिर से झगड़ा हो गया और उन दोनों में खूब ज़ोर ज़ोर से लड़ाई होने लगी कि शैतान ने सोचा कि पति पत्नी की यह लड़ाई तो ठीक नहीं है सो वह वहॉ पहुँचा

और बिल्ली की पत्नी की तरफ से बिल्ली से लड़ा और बिल्ली को एक घूँसा मार कर गिरा दिया।

जब पत्नी ने यह देखा कि शैतान ने उसके पति को गिरा दिया तो उसने शैतान को ज़ोर से एक डंडा मारा जिससे शैतान नीचे गिर गया।

पत्नी ने शैतान को ज़ोर की डॉट लगायी तो वह पीछे की तरफ भागा। पत्नी आगे बढ़ती आयी और शैतान पीछे हटता चला गया और पीछे पीछे हटते हटते आखिर वह बिल्ली की आराम कुरसी में जा कर गिर गया।

बिल्ली ने जब शैतान को अपनी आराम कुरसी में गिरे हुए देखा तो समझ गया कि अब वह और उसका दुश्मन दोनों सुरक्षित हैं।

वह अपनी पत्नी के पास आया और प्यार से बोला — "क्यों नाराज होती हो प्रिये। मुझे बेरहमी बिल्कुल भी अच्छी नहीं लगती। तुम ज़रा जा कर आग में चिमटा गरम करके ले आओ।"

यह सुन कर शैतान ने उठने की कोशिश की पर उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह तो उस कुरसी से उठ ही नहीं पा रहा है।

बिल्ली बोला — "क्या बात है निक, तुम्हारी कुछ तबियत खराब लगती है।"

निक ने एक बार फिर उठने की कोशिश की परन्तु वह तो जैसे उस कुरसी से चिपक सा गया था।

बिल्ली फिर बोला — "मुझे खुशी है कि तुम यहॉ आ गये। मुझे दूर देशों की यात्रा का बड़ा शौक है। तुम उठो तो ज़रा घूमने चलते हैं।

तुमको तो मालूम ही है कि ईमानदारों के बीच में सौदा तो सौदा ही होता है और ईमानदारों का मतलब होता है हम और तुम। अरे हॉ जूडी[31], चिमटा गरम हो गया क्या?"

इस समय शैतान की हालत देखने लायक थी पर वह सॅभल कर बोला — "देखो बिल्ली मैंने पहले भी तुहारी सहायता की है और आज भी करने को तैयार हूॅ। चलो मैं तुमको सात साल और देता हूॅ।" पर बिल्ली को तो जैसे कुछ सुनायी ही नहीं दे रहा था।

शैतान फिर बोला — "बिल्ली देखो मैंने हमेशा ही तुम्हारे परिवार की सहायता की है।"

बिल्ली बीच में ही बोला — "बस बस रहने दो और अब तुम अपनी नाक बनवाने के लिये तैयार हो जाओ।"

निक बोला — "मैं ज़िन्दगी भर तुम्हारे बच्चों का पालन पोषण करूॅगा और उनको दुनियॉ में सबसे बड़ा आदमी बनाऊॅगा चाहे वे बनना चाहें या न चाहें।"

बिल्ली बोला — "और मैं भी तुम्हारी नाक के साथ यही करूॅगा।" कहते हुए अपने हाथ में लिया हुआ गरम चिमटा उसने उसकी नाक से छुआ दिया और उसकी नाक खींच ली।

[31] Judy – name of Billy's wife

चिमटा उसने अपनी पत्नी को दे दिया और उसकी नाक उसने दीवार पर पॉच फुट ऊॅची जगह पर चिपका कर उस पर अपना टोप टॉग दिया।

फिर वह बोला — "अब तुम मुझे उतने ही पैसे दो जितने तुमने मुझे पहले दिये थे और दफा हो जाओ।"

निक बोला — "ठीक है।" और तुरन्त ही उतने ही पैसे बिल्ली के पैरों के पास आ गिरे जितने उसने उसको पहले दिये थे।

बिल्ली ने पैसे उठाये और निक को छोड़ दिया। निक चला गया। बिल्ली एक बार फिर सात साल के लिये अमीर हो गया था और सात साल के बाद फिर गरीब हो गया।

ऐसी ही हालत में फिर एक दिन सुबह बिल्ली खड़ा सोच रहा था कि परिवार के लिये नाश्ते का इन्तजाम कैसे किया जाये कि शैतान फिर उसके पास आया।

अबकी बार शैतान यह सोच रहा था कि वह बिल्ली के सामने कैसे जाये सो उसने एक सोने के सिक्के का रूप रखा और एक ऐसी जगह जा कर बैठ गया जहॉ बिल्ली उसको आसानी से देख सकता था। वह इस ताक में था कि बस बिल्ली एक बार मुझे उठा ले फिर देखता हूॅ मैं उसको।

बिल्ली ने उसे देखा और खुशी खुशी उठा कर उसे अपने बटुए में रख लिया। बटुए में घुसते ही शैतान एक ज़ोर की हॅसी हॅसते हुए बोला — "ओह बिल्ली आखिर आज मैंने तुम्हें पकड़ ही लिया।

अपने सामने पड़ी चीज़ ज़रा सोच समझ कर उठाया करो। इतना लालच भी किस काम का।"

बिल्ली ने एक ज़ोर का ठहाका लगाया और बोला — "अरे बदकिस्मत, तो यह तुम हो? तुम हमेशा ही मेरे जाल में फॅसने के लिये क्यों तैयार बैठे रहते हो?"

शैतान ने बिल्ली के बटुए में से निकलने की लाख कोशिश की पर सब बेकार। निक ने सोचा कि आज वह बैठे बिठाये फिर बिल्ली के जाल में कहॉ से फॅस गया।

निक फिर बोला — "बिल्ली अब तो हम एक दूसरे को अच्छी तरह से जान गये हैं। चलो मैं तुमको सात साल और उतना ही पैसा और दूॅगा। मुझे यहॉ से निकालो।"

बिल्ली बोला — "आराम से आराम से, निक आराम से। निक तुम्हें मेरे उस स्ले वाले हथौड़े का वजन तो याद होगा। तुम्हारे लिये उतना ही काफी है।"

निक बोला — "मैं मानता हूॅ कि मैं तुम्हारी टक्कर का नहीं हूॅ। मुझे छोड़ दो मैं तुम्हें दोगुना पैसा दूॅगा। मैं सिक्का बन कर तुमसे तो केवल मजाक कर रहा था।"

बिल्ली बोला — "तो मैं भी तो कुछ मजाक कर लूॅ न।"

निक बोला — "मैं तुम्हारे सामने एक सलाह रखता हूॅ।"

बिल्ली बोला — "कुछ नहीं। मैं तुम्हारी कोई सलाह नहीं सुनने वाला।"

इस बार बिल्ली की पत्नी बोली — "इस पापी की बात भी एक बार सुन लो न कि यह क्या कहना चाहता है।"

शैतान बोला — "तुम जितने चाहोगे मैं तुम्हें उतने पैसे दूँगा, बस इस बार तुम मुझे आजाद कर दो।"

बिल्ली बोला — "तुम मुझे पिछली बार से दोगुने पैसे दे दो और दफा हो जाओ।"

तुरन्त ही उसके सामने सोने के चमकते सिक्कों का ढेर लग गया। बिल्ली ने अपना बटुआ खोला, सोने के वे चमकते सिक्के उसमें डाले और निक को आजाद कर दिया।

बिल्ली की पुरानी आदतें फिर से लौट आयीं। उसके दो लड़के थे। उनमें से एक को विरासत में उसी की आदतें मिली थीं, यहाँ तक कि नाम भी।

उसके दूसरे बेटे का नाम जेम्स था। वह बहुत ईमानदार और मेहनती लड़का था। वह अपने पिता को छोड़ गया और उसने अपनी मेहनत से खूब नाम कमाया, खूब पैसा कमाया और फिर कैसिल डाउसन[32] नाम का शहर बसाया।

और फिर एक दिन बिल्ली मर गया। वैसे तो जब कोई आदमी मर जाता है तो उसकी ज़िन्दगी की कहानी उसी के साथ ही खत्म हो जाती है पर बिल्ली के बारे में ऐसा नहीं है। उसकी कहानी आगे भी बढ़ी सो अब हम पढ़ते हैं उसकी आगे की कहानी। X X X X X

[32] Castle Dawson – name of a city

जैसे ही बिल्ली मरा वह सेन्ट मोरोकी के पास गया। यह वही सेन्ट था जिसने बिल्ली को तीन इच्छाओं का वरदान दिया था। वहॉ जा कर उसने धीरे से उसका दरवाजा खटखटाया। सेन्ट मोरोकी ने दरवाजा खोला।

बिल्ली धीरे से बोला — "भगवान आपकी इज़्ज़त बनाये रखे।"

सेन्ट मोरोकी बोले — "जाओ जाओ, तुम्हारे जैसे गरीब आदमी के लिये यहॉ कोई जगह नहीं है।"

बिल्ली बहुत थक गया था सो उसको अब आराम चाहिये था। वह चलते चलते एक काले फाटक पर पहुँचा और उसे खटखटाया तो उससे कहा गया कि जब वह अपना नाम बतायेगा तभी उसे अन्दर आने की इजाज़त मिल पायेगी।

बिल्ली बोला — "बिल्ली डाउसन।"

चौकीदार ने अपने साथी से कहा — "तुरन्त जाओ और मालिक को खबर करो कि वह जिससे इतना डरते हैं वही उनके दरवाजे पर खड़ा है।

बिल्ली का पुराना साथी जल्दी जल्दी बाहर निकला और चिल्लाया — "उसको अन्दर मत घुसने देना। फाटक पर ताला लगा दो। क्योंकि अगर वह अन्दर आ गया तो मैं खतरे में पड़ जाऊँगा। और बल्कि फिर इस घर में कोई और भी नहीं बचेगा।"

फिर वह बिल्ली से बोला — "जाओ जाओ, मैं तुम्हें बहुत अच्छी तरह जानता हूँ। तुम यहाँ अन्दर नहीं आ पाओगे।"

बिल्ली मुस्कुरा कर शैतान से बोला — "ओह तो तुम यहाँ रहते हो। तुम मुझसे डरते हो?"

तुरन्त ही उस शैतान ने बिल्ली की नाक नोच ली और बिल्ली को ऐसा लगा जैसे उसकी नाक उसी लाल गरम चिमटे से पकड़ ली गयी हो जैसे लाल चिमटे से उसने एक बार निक की नाक पकड़ी थी।

उसके बाद बिल्ली वहाँ से चला तो गया परन्तु हमेशा उसको यही लगता रहा कि उसकी नाक बराबर जल रही है। गरमी हो या सरदी, दिन हो या रात, और वह आज तक जल रही है। और उसकी वजह से तभी से वह तड़पता सा इधर से उधर घूमता फिर रहा है।

उसकी दाढ़ी बढ़ कर चिपक गयी है। अपनी नाक को ठंडा करने के लिये आजकल वह भले यात्रियों की नाक लेने के लिये रात को उनको उनके रास्तों से भटका देता है पर अभी तक वह किसी की नाक नहीं ले पाया है।

तुम अपनी नाक संभाल कर रखना कभी तुम कहीं रास्ता भटक जाओ और वह तुम्हारी नाक ले कर रफूचक्कर हो जाये।

राजाओं, रानियों, राजकुमारियों और डाकुओं की कहानियॉ

6 बारह जंगली हंस[33]

एक बार आयरलैंड में एक राजा और रानी थे। उनके बारह बेटे थे परन्तु फिर भी वे दुखी थे क्योंकि उनके कोई बेटी नहीं थी।

ऐसा अक्सर होता है कि जो कुछ हमारे पास होता है हम उसकी तो परवाह करते नहीं हैं और जो नहीं होता उसी की इच्छा करते हैं। ऐसा ही कुछ इस रानी के साथ भी था। वह एक लड़की के लिये बहुत बेचैन थी।

एक दिन जाड़ों के मौसम में जब सब जगह बरफ ही बरफ फैली हुई थी रानी ने एक ताजा मरा हुआ बछड़ा और उसके बराबर में बैठा एक रैवन[34] पक्षी देखा तो उसके मन में एक इच्छा जागी और वह कह उठी — "काश मेरे एक बेटी होती जिसका रंग बरफ जैसा सफेद होता, उसके गाल इस बछड़े के खून की तरह लाल होते और उसके बाल इस रैवन की तरह काले होते।"

पर जैसे ही ये शब्द उसके मुँह से निकले कि वह डर के मारे कॉप गयी। उसने अपने सामने एक बहुत ही बूढ़ी औरत को खड़े देखा।

---

[33] Twelve Wild Swans – a folktale of Ireland, Europe

[34] Raven is a crow-like bird. See its picture above.

वह औरत बोली — "बेटी, ऐसी इच्छा को अपने मुँह से निकाल कर तुमने अच्छा नहीं किया और अब तुम इसकी सजा भुगतने के लिये तैयार हो जाओ क्योंकि तुम्हारी यह इच्छा पूरी की जा चुकी है।

जैसी बेटी की तुमने इच्छा की है वैसी ही बेटी अब तुम्हारे घर में जन्म लेगी। परन्तु जिस समय वह जन्म लेगी उसी समय तुम अपने दूसरे बच्चों को खो दोगी।" यह कह कर वह औरत तो गायब हो गयी और रानी वहीं की वहीं बुत सी बनी खड़ी रह गयी।

उस बुढ़िया ने जैसा कहा था वैसा ही हुआ। समय आने पर उसने वैसी ही एक बेटी को जन्म दिया जैसी बेटी की उसने इच्छा की थी।

हालॉकि बेटी के आने के समय उसने अपने बारहों बेटों को एक कमरे में बिठा कर उन पर कड़ा पहरा लगा दिया पर जब उसके घर बेटी आयी तो पहरेदारों ने बाहर पंखों के फड़फड़ाने की आवाज सुनी।

उन्होंने बाहर देखा तो वहॉ उनको बारह हंस एक के बाद एक खुली खिड़की से बाहर जाते और उड़ते दिखायी दिये। वे सब तुरन्त ही जंगल की ओर उड़ गये और गायब हो गये।

राजा को अपने बेटों के इस तरीके से गायब हो जाने का बहुत ही ज़्यादा अफसोस हुआ। उसको अपनी पत्नी पर शायद और भी

ज़्यादा गुस्सा आता अगर उसे यह पता चल जाता कि यह सब रानी की इच्छा का फल था।

राजकुमारी बहुत सुन्दर थी और सबकी बहुत प्यारी थी। जब वह बारह साल की हुई तो बहुत उदास और अकेली रहने लगी। उसने अपने उन भाइयों के बारे में पूछना शुरू कर दिया था जिनके लिये वह सोचती थी कि वे मर चुके थे।

रानी को यह भेद छिपाना बहुत मुश्किल हो गया था क्योंकि राजकुमारी एक के बाद एक सवाल पूछती ही जाती थी। अन्त में उसे अपनी बेटी को सब कुछ सच सच बताना ही पड़ा।

राजकुमारी बोली — "मॉ, मेरी ही वजह से मेरे भाई जंगली हंस बन कर तकलीफें उठा रहे हैं। मैं आज ही उनको ढूँढने जाती हूँ और फिर से उनको राजकुमारों के रूप में लाने की कोशिश करती हूँ।" राजा और रानी दोनों ने उसको रोकने की बहुत कोशिश की पर वह नहीं रुकी।

अगली रात वह महल से निकल पड़ी और जंगल की ओर चल दी। उसने साथ में रास्ते मे खाने के लिये कुछ केक, मेवा, फल और मीठे वाले केंकड़े ले लिये।

चलते चलते अगले दिन शाम को उसको लकड़ी का एक घर दिखायी दिया। उस घर के चारों तरफ बागीचा था जिसमें सुन्दर सुन्दर फूल लगे थे। वह उस घर के अन्दर चली गयी।

अन्दर उसने एक खाने की मेज लगी देखी जिस पर बारह प्लेटें रखी थीं, बारह चम्मच रखे थे, बारह छुरी और कॉटे रखे थे। वहॉ केक थी, मुर्गा था और फल भी थे। उसी कमरे में एक तरफ आग जल रही थी। बराबर में एक दूसरा कमरा था जिसमें बारह पलंग पड़े थे।

अभी वह यह सब देख ही रही थी कि इतने में उसको पैरों की आवाज सुनायी दी और उसने देखा कि वहॉ बारह नौजवान चले आ रहे हैं। जैसे ही उन्होंने इस लड़की को देखा तो उनके चेहरों पर उदासी छा गयी।

उनमें से सबसे बड़ा नौजवान बोला — "ओह किसकी बदकिस्मती से तुम यहॉ आयी हो? क्योंकि केवल एक लड़की की वजह से ही हम अपने पिता के घर से निकाले गये हैं और अब हम सारा दिन हंसों के रूप में यहॉ रहते हैं।

इस बात को बारह साल बीत गये और हमने तभी यह कसम खायी थी कि हमारी ऑखों के सामने जो भी पहली लड़की आयेगी हम उसे जान से मार डालेंगे।

और अब यह बड़े अफसोस की बात है कि आज तुम जैसी भोली भाली और सुन्दर लड़की हमारे सामने आ गयी है। पर क्या करें हमें अपनी कसम तो पूरी करनी ही पड़ेगी।"

राजकुमारी बोली — "मुझे मारिये मत। मैं ही आप लोगों की वह एकलौती बहिन हूँ जिसकी वजह से आपको महल से निकलना पड़ा। कल से पहले मुझे इस बात का बिल्कुल भी पता नहीं था।

मैं अपने माता पिता के मना करने पर भी आप लोगों को ढूँढने और आप लोगों के लिये कुछ करने निकली हूँ, अगर मैं कुछ कर पाऊँ तो।"

यह सुन कर बारहों नौजवानों की मुट्ठियाँ भिंच गयी और उनके मुँह से निकल पड़ा — "हमारी कसम को आग लगे पर अब हम क्या करें?"

तभी एक बुढ़िया उस मकान के अन्दर घुसी और बोली — "मैं बताती हूँ कि तुम लोग क्या करो। सबसे पहले तो अपनी कसम तोड़ो जिसको तुम्हें लेना ही नहीं चाहिये था।

अगर तुम लोगों ने इस लड़की को और ज़्यादा कुछ कहा तो मैं तुम लोगों को पेड़ के तनों में बदल दूँगी। पर मैं तुम लोगों का भला चाहने वाली हूँ। यह लड़की भी तो तुम लोगों को इस शाप से आजाद कराने ही आयी है।"

फिर उसने उस लड़की से कहा — "बेटी, अब तुम अपने भाइयों के आजाद होने का तरीका सुनो। इस जंगल में बाहर की तरफ जो कपास लगी है वह तुम अपने हाथ से इकट्ठा करके उसको धुनो, कातो और उसके धागे से बारह कमीजें बनाओ।

पर इस सबके बीच अगर तुम एक बार भी बोलीं, हॅसी या रोयी तो तुम्हारे ये भाई हमेशा के लिये हंस बने रह जायेंगे। यह काम पॉच साल में खत्म हो जाना चाहिये। और राजकुमारों तब तक तुम लोग अपनी बहिन की देखभाल करो।"

इतना कह कर वह बुढ़िया गायब हो गयी और भाई लोग यह सोचने लगे कि उनमें से सबसे पहले कौन अपनी बहिन का धन्यवाद करे।

तीन साल तक राजकुमारी कपास चुनने, उसे धुनने कातने और उसकी कमीजें बनाने में लगी रही। उसने तीन साल में आठ कमीजें बना लीं थीं। इस बीच वह बेचारी न हॅसी, न बोली और न रोयी।

एक दिन वह सुबह के समय बगीचे में बैठी सूत कात रही थी कि एक कुत्ता आया और उसके कन्धों पर अपने पंजे रख कर खड़ा हो गया। फिर उसने राजकुमारी का माथा चाटा और बाल भी चाटे।

इतने में उसे एक राजकुमार आता दिखायी दिया। उसने इस तरह अचानक वहॉ आने के लये राजकुमारी से कई बार माफ़ी मॉगी। फिर उसने उससे बातें करने की कई बार कोशिश की परन्तु राजकुमारी कुछ नहीं बोली।

इधर राजकुमार उसकी इन सब बातों से इतना मोहित हुआ कि वह उससे प्यार करने लगा। उसने उसको बताया कि वह एक देश का राजकुमार था और उसको अपनी पत्नी बनाना चाहता था।

इधर राजकुमारी भी उसको प्यार करने लगी थी। हालॉकि कई बातों में उसको ना में सिर हिलाना पड़ा परन्तु अन्त में उसने हॉ में सिर हिला दिया और अपना हाथ राजकुमार के हाथ में दे दिया।

राजकुमारी को मालूम था कि उसके भाई और परी उसका पता लगा ही लेंगे सो जाने से पहले उसने अपनी रुई ली, आठों कमीजें लीं, और राजकुमार के साथ उसके घोड़े पर बैठ कर उसके साथ चल दी।

राजकुमार राजकुमारी को अपने घर ले तो जा रहा था परन्तु उसको अपनी सौतेली मॉ से डर लग रहा था कि कहीं उसने उसको स्वीकार नहीं किया तो। खैर, घर जा कर बड़ी धूमधाम से उन दोनों की शादी हो गयी।

सौतेली मॉ इस सबसे बिल्कुल भी खुश नहीं थी। उसको लग रहा था कि वह लड़की यकीनन ही जंगल के किसी लकड़हारे की बेटी थी इसलिये वह उसको बहुत परेशान करती थी परन्तु राजकुमार अपनी रानी को बहुत प्यार करता था।

समय आने पर छोटी रानी ने एक बेटे को जन्म दिया तो राजा को बहुत ही खुशी हुई परन्तु सौतेली मॉ इस बात से बहुत ही ज़्यादा नाखुश थी।

वह यह सोच ही रही थी कि वह उस बच्चे का क्या करे कि इतने में उसे बगीचे में एक भेड़िया दिखायी दिया। बस उसको समझ में आ गया कि उसको क्या करना है। उसने तुरन्त ही सोती हुई

छोटी रानी के पास से बच्चे को उठाया और उसे भेड़िये की तरफ फेंक दिया।

भेड़िये ने भी तुरन्त ही बच्चे को अपने मुँह में लपक लिया और बगीचे को पार करता हुआ जंगल की तरफ भाग गया। इधर रानी ने अपनी उँगली चीर कर कुछ खून निकाला और छोटी रानी के मुँह पर लगा दिया।

कुछ देर बाद राजकुमार शिकार से वापस लौटा तो बड़ी रानी ने उसके सामने झूठे ऑसू बहा कर उसे बताया कि छोटी रानी ने अपने बच्चे को खा लिया है और बच्चे का खून अभी भी उसके मुँह पर लगा है। और यह कह कर उसने छोटी रानी का मुँह भी राजकुमार को दिखा दिया।

राजकुमार यह सब देख सुन कर बहुत दुखी हुआ। इधर छोटी रानी बेचारी न कुछ बोल सकती थी और न रो सकती थी। राजकुमार ने सब लोगों को यही बताया कि छोटी रानी बच्चे को लेकर खिड़की के पास खड़ी थी, बच्चा उसके हाथों से छूट गया और एक भेड़िया उसको ले भागा।

परन्तु बड़ी रानी यह सब कहने के बाद सभी लोगों से छिपे रूप से यह भी कह देती थी कि यह सब गलत था और सही वही था कि वह अपने बच्चे को खा गयी थी।

काफी समय तक छोटी रानी दुख में डूबी रही क्योंकि एक तो उसका बच्चा मर गया था और दूसरे राजकुमार भी अब उससे कुछ

खिंचा खिंचा रहता था। पर न वह कुछ बोली और न रोयी। वह केवल कमीजें बनाने में ही लगी रही।

अक्सर ही वह बारह हंसों को अपनी खिड़की के आस पास उड़ते देखती। धीरे धीरे पॉचवॉ साल भी खत्म होने को आया। उसकी ग्यारह कमीजें खत्म हो चुकी थीं और बारहवीं कमीज की केवल एक आस्तीन रह गयी थी। उसी समय उसने एक सुन्दर सी बेटी को जन्म दिया।

अबकी बार राजकुमार ने खुद उसके कमरे की पहरेदारी करने का निश्चय किया पर बड़ी रानी ने फिर भी किसी तरह उस बच्ची को भी छोटी रानी के पास से उठवा लिया।

वह उसको मारने ही वाली थी कि उसको फिर से एक भेड़िया बगीचे में दिखायी दे गया। बस उसने वह बच्ची भी उस भेड़िये की तरफ फेंक दी।

भेड़िये ने उसको भी तुरन्त ही अपने मुॅह में दबोच लिया और बगीचा पार करके जंगल की तरफ भाग गया। रानी ने सोती हुई रानी के मुॅह पर फिर खून लगा दिया और शोर मचा दिया कि छोटी रानी ने अपनी बच्ची को खा लिया।

घर के सभी लोग दौड़े चले आये और उन्होंने देखा कि बच्ची अपने बिस्तर पर नहीं है और छोटी रानी के मुॅह पर खून लगा है।

बड़ी रानी सोचती थी कि इन दो घटनाओं के बाद छोटी रानी शायद इस दुख को नहीं सॅभाल पायेगी और वह मर जायेगी।

परन्तु छोटी रानी तो इस समय ऐसी हालत में थी कि न तो उसके पास सोचने का समय था, न प्रार्थना करने का, न रोने का, न हॅसने का और न ही अपनी सफाई देने का। वह तो बस अपनी बारहवीं कमीज की आस्तीन पूरी करने में लगी हुई थी।

राजकुमार ने अपने घर वालों से कई बार कहा कि वह छोटी रानी को जंगल में वहीं छोड़ आता है जहॉ से वह उसको लाया था पर बड़ी रानी ने उसकी एक न सुनी और दरबारियों की सहायता से उसको उसी दिन तीन बजे जला कर मार देने का फैसला सुना दिया।

छोटी रानी के जलाने का समय जब पास आ गया तो राजकुमार महल के किसी दूसरे हिस्से में चला गया क्योंकि इस सबसे वह बहुत ही दुखी था और अपनी प्रिय रानी को इस तरह मरते नहीं देख सकता था। पर वह कुछ कर भी नहीं सकता था।

कुछ ही देर में छोटी रानी को जलाने वाले आ पहुॅचे। वे उसको उस जगह पर ले गये जहॉ उसको जलाया जाना था। छोटी रानी ने सारी कमीजें अपने साथ ले लीं। जाते समय भी वह आखिरी कमीज में कुछ काम करती जा रही थी।

जब वे लोग उसको खम्भे से बॉध रहे थे तभी उसने आखिरी कमीज में आखिरी टॉका लगाया और एक ऑसू उसकी ऑख से कमीज पर गिर गया।

वह चिल्ला पड़ी — "मैं बेकुसूर हूॅ। मेरे पति को बुलाओ।"

केवल एक आदमी को छोड़ कर सभी ने अपने हाथ रोक लिये पर उस एक आदमी ने उन लकड़ियों के ढेर में आग लगा दी।

सभी आश्चर्यचकित रह गये जब सबने देखा कि कहीं से बारह हंस उड़ते हुए आये और उन्होंने अपने पंखों की फड़फड़ाहट से आग बुझा दी और छोटी रानी के चारों तरफ खड़े हो गये।

तुरन्त ही छोटी रानी ने सबके ऊपर एक एक कमीज डाल दी और पलक झपकते ही वे बारहों हंस सुन्दर राजकुमार बन गये। उन्होंने तुरन्त ही अपनी बहिन को खोल दिया। सबसे बड़े भाई ने आग लगाने वाले को एक झटके में ही मार दिया।

इतने में छोटी रानी का पति राजकुमार भी आ गया। उन सबके बीच एक बहुत ही सुन्दर स्त्री प्रगट हुई। उसकी गोद में एक चॉद सी बेटी थी और उसकी एक हाथ की उॅगली पकड़े एक छोटा सा सुन्दर राजकुमार खड़ा था।

उसने उन सबको पूरी कहानी सुनायी और बताया कि भेड़िये के रूप में वही उन दोनों बच्चों को ले गयी थी। उसने बच्चों को उनके माता पिता को सौंप दिया और गायब हो गयी।

राजकुमार अपनी छोटी रानी और अपने बच्चों के साथ खुशी खुशी रहने लगा और वे **12** राजकुमार भी अपने माता पिता के पास वापस चले गये।

इस तरह वह छोटी बहिन जिसकी वजह से उसके भाई हंस बन कर घर छोड़ कर गये थे उनको फिर से राजकुमार के रूप में वापस ले आयी।

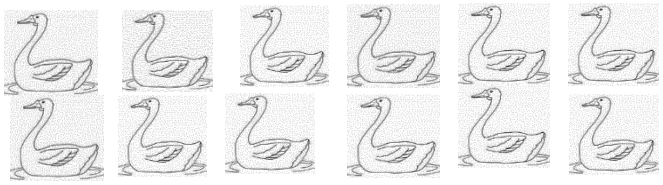

7 आलसी लड़की और उसकी चाचियॉ[35]

एक समय की बात है कि एक गरीब विधवा अपनी एक सुन्दर सी बेटी के साथ रहती थी। उसकी बेटी थी तो दिन के उजाले जैसी सुन्दर पर वह आलसी बहुत थी जब कि वह स्त्री खुद बहुत ही मेहनती थी।

वह स्त्री हमेशा यही चाहती थी कि उसकी बेटी भी उसी की तरह से मेहनती बने परन्तु सब बेकार। उसके मुॅह से तो शब्द भी इतनी मुश्किल से निकलते थे मानो उनको भी निकलने में आलस आ रहा हो।

एक दिन वह स्त्री अपनी बेटी को उसके आलसी होने पर डॉट रही थी कि उधर से एक राजकुमार अपने घोड़े पर सवार निकला। वह बोला — "लगता है मॉ जी कि आपके घर में कोई खराब बच्चा है जो जिसको आप इतना डॉट रहीं हैं नहीं तो इतनी सुन्दर लड़की को तो कोई इस तरह नहीं डॉट सकता।"

स्त्री बोली — "योर मैजेस्टी, बिल्कुल नहीं। मैं तो बल्कि इस लड़की को इतना ज़्यादा काम करने से मना करने की कोशिश कर रही थी।

[35] A Lazy Girl and Her Aunts – a folktale from Ireland, Europe.
This story is similar to Russian folktale Rumplestiltuskin. Read this and other Russian folktales in the Book "Roos Ki Lok Kathayen-1" written by Sushma Gupta in Hindi language.

आप शायद विश्वास नहीं करेंगे कि यह एक दिन में तीन पौंड तक रुई कात लेती है, अगले दिन उस सूत का कपड़ा बुन लेती है और तीसरे दिन उस कपड़े की कमीजें बना लेती है।"

यह सुन कर तो राजकुमार की ऑखें फटी की फटी रह गयीं। वह बोला — "अच्छा? तब तो यह लड़की मेरी मॉ को बहुत पसन्द आयेगी क्योंकि मेरी मॉ भी सूत बहुत जल्दी कातती हैं।

मॉ जी, आप ऐसा कीजिये कि अपनी बेटी को मेरे घोड़े पर मेरे पीछे बिठा दीजिये। मेरी मॉ इसको देख कर बहुत खुश होगी और हो सकता है कि एकाध हफ्ते में वह इससे मेरी शादी भी कर दे अगर आपकी बेटी राजी होगी तो।"

भेद खुलने का डर भी था और रानी बन जाने की खुशी भी, सो उन दोनों को यह समझ में नहीं आ रहा था कि वे क्या करें परन्तु फिर भी उस लड़की की मॉ ने अपनी बेटी को राजकुमार के घोड़े पर उसके पीछे बिठा दिया और राजकुमार उसको ले कर अपने घर चल दिया।

राजकुमार स्त्री को काफी धन दे कर उस लड़की को वहॉ ले गया।

लड़की के जाने के बाद उसकी मॉ बहुत परेशान हुई कि कहीं उसकी बेटी के साथ कुछ बुरा न हो जाये। राजकुमार ने रास्ते में उससे कई सवाल किये पर उनसे उसको उस लड़की के बारे में किसी खास बात का पता नहीं चल सका।

उधर रानी ने जब राजकुमार के पीछे एक देहाती लड़की को घोड़े पर बैठे देखा तो वह भी सकते में आ गयी लेकिन जब रानी ने उसका सुन्दर मुखड़ा देखा और उसके कामों के बारे में सुना तब उसे कुछ तसल्ली सी हुई।

इसी समय राजकुमार ने अपनी मॉ के कान में फुसफुसा दिया कि अगर वह लड़की राजी हो गयी तो वह उससे शादी भी कर सकता है।

शाम गुजर गयी और राजकुमार और वह लड़की जिसका नाम ऐन्टी[36] था आपस में एक दूसरे को चाहने लगे। परन्तु ऐन्टी कातना बुनना आदि कामों के बारे में तो सोच कर ही कॉप उठती थी।

रात को जब सोने का समय आया तो रानी उसको एक बहुत ही सुन्दर सजे हुए कमरे में सुलाने के लिये ले गयी। जब वह वहॉ से जाने लगी तो ऐन्टी से बोली — "बेटी, तुम इस रुई का सूत कातना। कल सुबह के बाद तुम इसे कभी भी शुरू कर सकती हो और यह सूत तुम मुझे परसों सुबह दे देना।"

रानी तो यह कह कर चली गयी परन्तु ऐन्टी को रात भर नींद नहीं आयी। वह रात भर यही सोच सोच कर रोती रही कि उसने अपनी मॉ की सलाह मान कर यह सब काम क्यों नहीं सीखा।

[36] Anty – name of the girl

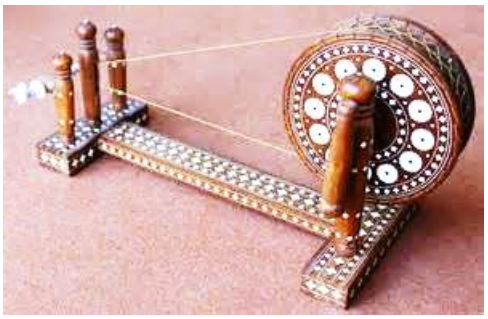

सुबह होने पर उसे एक कमरे में अकेले बिठा दिया गया और उसे एक बहुत ही बढ़िया किस्म का चरखा दे दिया गया।

कपास भी बहुत बढ़िया थी और चरखा भी परन्तु उसका धागा तो बार बार टूट जाता था। कभी वह बहुत बारीक आता और कभी बहुत मोटा।

क्योंकि ऐन्टी ने तो सूत कभी काता ही नहीं था इसलिये उससे सूत कत ही नहीं रहा था। आखिरकार ऐन्टी ने तंग हो कर चरखा एक तरफ खिसका दिया और रोने लगी।

इतने में एक बड़े पैरों वाली छोटी बुढ़िया उसके सामने प्रगट हुई और बोली — "बेटी तुम्हें क्या दुख है?"

ऐन्टी बोली — "मेरे सामने यह इतनी सारी कपास पड़ी है इस सबका सूत कात कर मुझे कल सुबह तक देना है और मुझसे तो एक गज सूत भी नहीं काता जा रहा है।"

बुढ़िया बोली — "जब तुम्हारी शादी होगी तो क्या तुम मुझे बुलाओगी? अगर तुम ऐसा करो तो रात को जिस समय तुम सो रही होगी तुम्हारा यह सारा सूत कत जायेगा।"

लड़की बोली — "ठीक है। मैं तुमको अपनी शादी पर आने के लिये अभी से बुलावा देती हूँ और वायदा करती हूँ कि मैं तुमको ज़िन्दगी भर नहीं भूलूँगी।"

बुढ़िया बोली — "ठीक है। तुम शाम तक अपने कमरे में ही रहो और शाम को जब रानी आये तो उससे कहना कि वह सुबह आ कर अपना सूत ले जा सकती है।"

ऐसा ही हुआ। अगले दिन सुबह रानी ने जब सूत देखा तो उसको देख कर बहुत खुश हुई और बोली — "कल तुम इस सूत का कपड़ा बुनना।"

बेचारी ऐन्टी इस बार पहले से भी ज़्यादा परेशान थी क्योंकि उसको तो कपड़ा बुनना भी नहीं आता था और वह राजकुमार को खोना नहीं चाहती थी।

यही सोचती वह परेशान सी बैठी थी कि एक भारी कमर वाली छोटी सी स्त्री उसके सामने प्रगट हुई और उससे पहले वाली बुढ़िया की तरह सौदा किया कि अगर वह उसको अपनी शादी में बुलायेगी तो रात भर में उसके सूत का कपड़ा बुन जायेगा।

ऐन्टी ने उसको विश्वास दिलाया कि वह उसको अपनी शादी में जरूर बुलायेगी। ऐन्टी ने हॉ कर दी तो वह उससे बोली कि वह आराम करे और रात भर में उसका कपड़ा बुन जायेगा। और अगले दिन सुबह जब वह लड़की उठी तो उसके लिये तो बहुत ही बढ़िया कपड़ा बुन कर तैयार था।

अगले दिन सुबह रानी ने जब कपड़ा देखा तो वह तो बहुत ही खुश हो गयी। वह बोली — "बेटी अब तुम आराम करो कल मुझे इस कपड़े की कमीजें बना कर और दिखा देना। तुम एक कमीज

मेरे बेटे को भी दे सकती हो, बस फिर तुम्हारी और राजकुमार की शादी हो जायेगी।"

अगले दिन तो ऐन्टी बहुत ही परेशान थी। वह राजकुमार के जितनी पास थी उतनी ही दूर भी थी। पर आज वह उतना घबरा नहीं रही थी क्योंकि उसको विश्वास था कि आज भी उसकी परेशानी दूर करने के लिये कोई न कोई आ ही जायेगा। वह दोपहर तक शान्ति से इन्तजार करती रही।

दोपहर बाद उसके सामने एक बड़ी लाल नाक वाली स्त्री प्रगट हुई और उसने भी उससे पहली दोनों स्त्रियों की तरह ही सौदा कर के उसकी बारह कमीजें सिल कर मेज पर तह करके रख दीं। सुबह जब रानी आयी तो उन कमीजों को देख कर बहुत खुश हुई।

अब तो बस दोनों की शादी की ही बात होने लगी। शादी बहुत ही शानदार ढंग से हुई। ऐन्टी की मॉ भी आयी हुई थी। रानी के मुँह पर केवल ऐन्टी की कमीजों की ही तारीफ थी।

तभी एक पहरेदार ने आ कर ऐन्टी से कहा "राजकुमारी जी, आपकी चाची अन्दर आना चाहती हैं।"

ऐन्टी तो यह सुन कर घबरा गयी कि यह उसकी कौन सी चाची आ गयी क्योंकि उसकी जानकारी में तो उसकी कोई चाची थी ही नहीं।

वह अपनी उन तीनों स्त्रियों को बिल्कुल ही भूल गयी थी जिन्होंने उसको रुई कातने में, फिर उस सूत का कपड़ा बुनने में और फिर उनकी कमीजें बनाने में सहायता की थी।

पर राजकुमार बोला — "उनको कहो कि ऐन्टी का कोई भी रिश्तेदार हम लोगों के पास कभी भी आ सकता है।"

सो बड़े पैरों वाली एक स्त्री आयी और राजकुमार के पास आ कर बैठ गयी। बड़ी रानी को यह अच्छा नहीं लगा पर उसका कुशल मंगल पूछने के बाद रानी ने पूछा — "मैम, क्या मैं पूछ सकती हूँ कि आपके ये पैर इतने बड़े क्यों हैं?"

वह स्त्री बोली — "मैं ज़िन्दगी भर चरखे पर खड़े हो कर सूत कातती रही हूँ न, इसी लिये।"

यह सुन कर राजकुमार ऐन्टी से बोला — "प्रिये, मैं तो अबसे तुम्हें कभी सूत कातने ही नहीं दूँगा।"

तभी एक पहरेदार ने फिर आ कर ऐन्टी से कहा "राजकुमारी जी, आपकी कोई दूसरी चाची अन्दर आना चाहती हैं।"

राजकुमार फिर बोला — "उनसे कहो कि ऐन्टी का कोई भी रिश्तेदार हम लोगों के पास कभी भी आ सकता है।"

फिर एक भारी कमर वाली स्त्री आयी और आ कर बैठ गयी। रानी ने उसकी भी कुशल मंगल पूछने के बाद उससे पूछा — "मैम,

क्या मैं पूछ सकती हूँ कि आपकी कमर बीच में से इतनी चौड़ी क्यों है?"

वह स्त्री बोली — "रानी जी, मैं सारी ज़िन्दगी बैठ कर कपड़ा बुनती रही हूँ न, इसी लिये।"

यह सुन कर राजकुमार बोला — "प्रिये, मैं तो आज से तुमको कपड़ा बुनने के लिये कभी करघे पर बैठने ही नहीं दूँगा।"

इसके बाद बड़ी लाल नाक वाली स्त्री आयी और वहाँ आ कर बैठ गयी। रानी ने उससे भी पूछा — "मैम, क्या मैं जान सकती हूँ कि आपकी नाक इतनी बड़ी और लाल क्यों है?"

वह स्त्री बोली — "क्योंकि मैं ज़िन्दगी भर सिर नीचा करके कपड़े सिलती रही हूँ इसलिये मेरे शरीर का सारा खून मेरी नाक की तरफ खिंच आया है, इसी लिये।"

राजकुमार फिर उस लड़की से बोला — "प्रिये, मैं तो तुम्हें कभी सुई ही नहीं पकड़ने दूँगा।"

पर बच्चो, यह तो परियों की कहानी है। ऐसा भी कहीं होता है क्या? न तो आजकल राजकुमार हैं, न सहायता करने के लिये परियाँ हैं। सब कुछ अपने आप ही करना पड़ता है।

इसलिये इस कहानी से हमें यही सीखना चाहिये कि सबको अपनी ज़िन्दगी में बहुत काम करना चाहिये क्योंकि सभी लोग काम को प्यार करते हैं और हर जगह काम की ही तारीफ होती है।

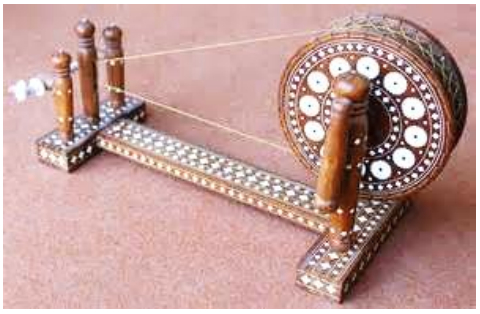

8 घमंडी राजकुमारी[37]

बहुत पुरानी बात है कि आयरलैंड में किसी जगह एक राजा राज करता था। उसकी एक बेटी थी जो सुन्दर तो बहुत थी पर साथ में घमंडी भी बहुत थी।

जब वह शादी के लायक हुई तो राजा ने कई राजकुमारों को बुलवाया ताकि वह किसी राजकुमार को पसन्द कर ले तो उससे उस की शादी कर दी जाये पर वह सब में कोई न कोई बुराई बता देती थी और उससे शादी करने से इनकार कर देती थी।

एक बार राजा ने कुछ राजकुमारों को बुलाया और अपनी बेटी से उनमें से एक को चुनने के लिये कहा। परन्तु इस बार भी वैसा ही हुआ।

उसने हर राजकुमार में कोई न कोई खोट निकाल दिया और शादी से इनकार कर दिया। किसी को लम्बा ताड़ बताया तो किसी को छोटा बौना। किसी को मोटा बताया तो किसी को छड़ी।

अन्त में वह एक सुन्दर से राजकुमार के पास आ कर खड़ी हुई तो उसमें वह कोई खोट न निकाल सकी। वह कुछ परेशान सी हो गयी। अब वह क्या करे। तभी उसको उस राजकुमार की ठोड़ी के नीचे एक बाल दिखायी दे गया।

[37] Proud Princess – a folktale from Ireland, Europe

बस फिर क्या था उसको मौका मिल गया, वह बोली — "मैं तुमसे शादी नहीं कर सकती ओ दढ़ियल।" और चली गयी।

यह सब सुन कर राजा बहुत परेशान हुआ। उसने अपनी बेटी से कहा — "बेटी तुम हर किसी में ऐब निकालती हो अब तुम्हारी सजा यही है कि कल सुबह जो भी पहला भिखारी या गाने वाला मेरे दरवाजे पर आयेगा मैं तुम्हारी शादी उसी से कर दूँगा।"

अगले दिन सुबह ही एक भिखारी फटे कपड़े पहने, कन्धों तक बाल बढ़ाये और लम्बी सी दाढ़ी रखे राजा के दरवाजे पर आ कर गीत गाने लगा।

जब उसका गाना खत्म हो गया तब दरबार का दरवाजा खोला गया और उसको अन्दर बुला कर उससे राजकुमारी की शादी कर दी गयी। राजकुमारी बहुत रोयी चिल्लायी पर राजा ने उसकी एक न सुनी।

शादी के बाद राजा ने उस भिखारी को सोने की पॉच मुहरें दीं और कहा — "ये पॉच मुहरें तुम्हारे लिये हैं। अपनी पत्नी को लो और मेरी नजरों से दूर हो जाओ। और फिर कभी अपनी और अपनी पत्नी की सूरत मुझे मत दिखाना।"

वह भिखारी वह पॉच मुहरें और अपनी पत्नी को ले कर वहॉ से चला गया। राजकुमारी इस सबसे बहुत दुखी थी पर कुछ कर नहीं सकती थी। केवल एक ही चीज़ उसको इस समय तसल्ली दे रही थी – वे थे उसके पति के प्यार भरे शब्द और उसका नम्र बरताव।

चलते चलते वे एक जंगल में पहुँचे। राजकुमारी ने पूछा — "यह जंगल किसका है?"

उसका पति बोला — "यह जंगल उसी राजकुमार का है जिसको कल तुमने दढ़ियल कहा था।"

यही जवाब उसने रास्ते में पड़े मैदानों, खेतों और अन्त में आने वाले एक शहर के बारे में भी दिया।

यह सुन कर राजकुमारी सोचने लगी कि "मैं भी कितनी बेवकूफ थी कि मैंने उस अच्छे खासे राजकुमार से शादी नहीं की। केवल उसकी दाढ़ी पर उगे एक बाल की वजह से ही मैंने उससे शादी करने से मना कर दिया।"

अन्त में वे एक छोटे से घर के सामने आ पहुँचे तो राजकुमारी ने पूछा — "यह तुम मुझे कहाँ ले आये हो?"

पति बोला — "पहले यह घर मेरा था आज से यह घर तुम्हारा है।"

राजकुमारी कुछ रुआँसी सी हो गयी पर वह बहुत थकी हुई और भूखी थी सो वह उसके साथ उस घर के अन्दर चली गयी।

पर उस घर में न तो खाने की मेज सजी हुई थी और न ही कहीं आग ही जल रही थी। आग जलाने और फिर खाना बनाने में उसको पति की सहायता करनी पड़ी।

फिर दोनों ने मिल कर घर साफ किया, खाना खाया और सो गये। राजकुमारी थकी थी सो वह तो बिना शाही पलंग के ही जैसे घोड़े बेच कर सो गयी।

अगले दिन उसने अपनी नयी पत्नी को सूती कपड़े की एक पोशाक ला कर दी। जब उसका घर का काम खत्म हो गया तो पति ने उसको कुछ जंगली घास ला कर दी और उसको टोकरियॉ बुनना बताया।

टोकरियॉ बनाते समय उस घास की नोकें राजकुमारी के हाथ में गड़ रहीं थीं जिनसे खून निकल रहा था। वह दर्द से रो पड़ी।

इसके बाद उसके पति ने उससे अपने कुछ कपड़े मरम्मत करने के लिये कहा तो सुई उसके हाथों में चुभने लगी और उनसे भी खून निकलने लगा। वह फिर रो पड़ी।

भिखारी पति से राजकुमारी का रोना नहीं देखा गया तो उसने उसके लिये कुछ मिट्टी के बरतन ला दिये और उनको बाजार में बेच आने के लिये कहा। यह तो उसके लिये बहुत ही मुश्किल काम था परन्तु क्या करती।

वह उनको ले कर बाजार गयी। वह वहॉ खड़ी इतनी सुन्दर और उदास लग रही थी कि दोपहर से पहले ही उसके सारे बरतन बिक गये। उसके पति को इस बात से बड़ी खुशी हुई।

पति ने उसको अगले दिन बरतन बेचने के लिये फिर बाजार भेजा। पर लगता था कि वह दिन उसके लिये अच्छा नहीं था। एक

शराबी उस दिन बाजार में आया और उसके सारे बरतन तोड़ कर चला गया।

राजकुमारी रोती हुई घर पहुँची तो वह भिखारी उसकी कहानी सुन कर बहुत दुखी हुआ और बोला — "तुम इनमें से किसी काम के लायक नहीं हो। मैं ऐसा करता हूँ कि मैं यहाँ के राजा के रसोइये को जानता हूँ तुमको मैं उससे कह कर शाही रसोई में काम दिलवा देता हूँ।"

बेचारी राजकुमारी एक बार फिर शरम से पानी पानी हो गयी पर वह क्या करती वह तो राजकुमारी थी उसको तो यह सब आता नहीं था।

पति ने उसको रसोइये से कह कर उसको शाही रसोई में काम दिलवा दिया था। वहाँ उसको काफी काम दिया जाता था। काम खत्म करके वह रात को घर चली जाती थी। जाते समय उसकी पोशाक की दोनों जेबें बची खुची खाने की चीज़ों से भरी रहतीं।

एक हफ्ते बाद उसने देखा कि रसोई में खूब हलचल मची हुई है। पूछने पर पता चला कि उस दिन राजा की शादी हो रही थी पर आश्चर्य की बात यह थी कि दुलहिन का पता ही नहीं था कि वह है कौन।

रोज की तरह रसोइये ने उस दिन भी उसकी जेबें खाने की चीज़ों से भर दीं और बोला — "चलो, तुम्हारे जाने से पहले एक बार राजा के कमरे को देख आयें कि वहाँ क्या हो रहा है।"

वे दरवाजे के पास आ कर कमरे में झॉकने को ही थे कि उसमें से राजा निकला और वह कोई दूसरा राजा नहीं बल्कि वही दढ़ियल राजा खुद ही था जिसको राजकुमारी ने पहले शादी करने से मना कर दिया था।

राजा रसोइये से बोला — "तुम्हारी इस सुन्दर नौकरानी को मेरे कमरे में झॉकने की कोशिश करने की सजा तो भुगतनी ही पड़ेगी। इसको मेरे साथ नाचना पड़ेगा।"

इससे पहले कि राजकुमारी हॉ या न कहती दढ़ियल राजा ने उसका हाथ पकड़ा और उसे कमरे के अन्दर ले गया। साजिन्दों ने उनके नाच के साथ साज बजाने शुरू किये और दोनों उनकी धुन पर नाचने लगे।

राजा को उसके साथ नाचते कुछ पल भी नहीं बीते थे कि नाचते में उसकी जेबों से खाने का सामान निकल कर नीचे फर्श पर गिर गया। वहॉ बैठे हर आदमी के मुॅह से एक चीख सी निकल गयी।

राजकुमारी तो यह सब देख कर शरम से पानी पानी हो गयी और अपना हाथ छुड़ा कर दरवाजे की तरफ भागी पर राजा ने उसको तुरन्त ही पकड़ लिया और उसे बड़े कमरे के पीछे वाले कमरे में ले गया और बोला — "प्रिये, क्या तुम मुझे नहीं जानतीं? मैं वही दढ़ियल राजा हूॅ जिससे तुमने कुछ दिन पहले शादी करने से इनकार कर दिया था।

और मैं ही तुम्हारा पति भी हूँ जो तुमको भिखारी का वेश रख कर तुमसे शादी कर लाया। और वे मेरे ही आदमी थे जो पहले दिन तुम्हारे सारे मिट्टी के बरतन खरीद कर ले गये। और मैं ही वह शराबी हूँ जिसने बाजार में तुम्हारे मिट्टी के बरतन तोड़ दिये थे।

जब तुम्हारे पिता ने तुम्हारी शादी मुझसे की थी वह मुझे अच्छी तरह जानते थे। और हम लोगों ने यह सब नाटक मिल कर केवल तुम्हारा घमंड दूर करने के लिये खेला था।"

राजकुमारी के दिल में शरम, डर और खुशी सभी विचार एक साथ आ रहे थे पर शायद पति के लिये प्रेम पहली बार इन सबसे ऊपर था क्योंकि यह सब सुन कर वह राजा के सीने पर अपना सिर रख कर बच्चों की तरह रो पड़ी और बोली "मुझे माफ कर दो दढ़ियल राजा।" राजा ने उसको धीरज बॅधाया और उसको अपनी दासियों को सौंप दिया।

दासियॉ उसको एक अलग कमरे में ले गयीं और कुछ देर बाद ही उसको सजा कर ले आयीं। सब लोग बैठे यही सोच रहे थे कि रसोई में काम करने वाली इस लड़की का अब क्या हाल होगा। परन्तु उन्होंने जब उसी लड़की को राजा के साथ रानी के रूप में सजे हुए आते देखा तो वे भौंचक्के से रह गये।

अब तक राजकुमारी के माता पिता भी वहीं आ गये थे। दोनों की शादी हो गयी और सारे महल में खुशी की लहर दौड़ गयी।

9 मूनाचर और मानाचर[38]

यह बहुत समय पुरानी बात है कि एक गॉव में मूनाचर और मानाचर[39] नाम के दो आदमी रहते थे। एक बार वे दोनों रसभरी चुनने गये।

मूनाचर जितनी रसभरी चुनता जाता था मानाचर वह सब रसभरियॉ खाता जाता था। जब मूनाचर को यह पता चला तो वह बहुत नाराज हुआ।

वह लकड़ी का एक डंडा ढूँढने निकला ताकि वह उससे एक रस्सी बना सके और उस रस्सी से मानाचर को फॉसी पर लटका सके क्योंकि उसने मूनाचर की रसभरियॉ खायीं थीं। सो वह एक डंडे के पास पहुँचा।

डंडा बोला — "मूनाचर भाई, कहॉ जा रहे हो?"

मूनाचर बोला — "मुझे एक डंडे की तलाश है जिससे मैं एक रस्सी बनाऊँगा और उस रस्सी से मानाचर को फॉसी लगाऊँगा जिसने मेरी सारी रसभरियॉ खायी हैं।"

---

[38] Moonachar and Manachar – a folktale from Ireland, Europe.
[This folktale appeared in "Popular Tales of the West Highlands: orally collected, vol 1. 1860." There it was collected from far Northern Europe region. Available at the Web Site : http://books.google.ca/books?pg=RA3-PA160&id=ZlMJAAAAQAAJ&redir_esc=y#v=onepage&q&f=false]

[39] Moonachar and Manachar

डंडा बोला — "तुम मुझे तब तक नहीं ले जा सकते जब तक तुम मुझे काटने के लिये कुल्हाड़ी नहीं लाते।" सो मूनाचर एक कुल्हाड़ी के पास पहुँचा।

कुल्हाड़ी ने पूछा — "मूनाचर भाई, कहाँ चल दिये?"

मूनाचर बोला — "मुझे एक कुल्हाड़ी की तलाश है जो डंडा काटेगी, डंडे से मैं रस्सी बनाऊँगा, रस्सी से फिर मैं मानाचर को फाँसी लगाऊँगा क्योंकि मानाचर ने मेरी सारी रसभरियाँ खा ली हैं।"

कुल्हाड़ी बोली — "मुझे पाने के लिये तुम्हें मेरे डंडे पर एक झंडी बाँधनी होगी।" सो मूनाचर एक झंडी के पास गया।

झंडी ने मूनाचर से पूछा — मूनाचर भाई, इधर कैसे आना हुआ?"

मूनाचर बोला — "मुझे एक झंडी की तलाश है जिसे मैं कुल्हाड़ी पर लगाऊँगा, कुल्हाड़ी डंडा काटेगी, डंडे से मैं रस्सी बनाऊँगा और उस रस्सी से मैं मानाचर को फाँसी लगाऊँगा क्योंकि मानाचर ने मेरी सारी रसभरियाँ खा ली हैं।"

झंडी बोली — "मैं तब तक कुल्हाड़ी के ऊपर नहीं लग सकती जब तक तुम मुझे पानी से गीला नहीं करोगे।" सो मूनाचर पानी के पास पहुँचा।

पानी ने पूछा — "क्या तलाश कर रहे हो मूनाचर भाई?"

मूनाचर बोला — "मैं पानी की तलाश में हूँ। पानी झंडी को गीला करेगा, झंडी मैं कुल्हाड़ी पर लगाऊँगा, कुल्हाड़ी डंडा काटेगी, डंडे से मैं रस्सी बनाऊँगा और उस रस्सी से मैं मानाचर को फाँसी लगाऊँगा क्योंकि मानाचर ने मेरी सारी रसभरियाँ खा ली हैं।"

पानी बोला — "तुम मुझे नहीं ले पाओगे जब तक कि हिरन मेरे अन्दर नहीं तैरेगा।" सो मूनाचर चलते चलते हिरन के पास पहुँचा।

हिरन ने पूछा — "किधर चल दिये मूनाचर भाई?"

मूनाचर बोला — "मैं हिरन की तलाश में हूँ। हिरन पानी में तैरेगा, पानी झंडी को गीला करेगा, झंडी मैं कुल्हाड़ी पर लगाऊँगा, कुल्हाड़ी डंडा काटेगी, डंडे से मैं रस्सी बनाऊँगा और उस रस्सी से मैं मानाचर को फाँसी लगाऊँगा क्योंकि मानाचर ने मेरी सारी रसभरियाँ खा ली हैं।"

हिरन बोला — "तुम मुझको नहीं पा सकते जब तक कोई कुत्ता मेरा पीछा न करे।" सो मूनाचर एक शिकारी कुत्ते के पास पहुँचा।

कुत्ता बोला — "मूनाचर भाई, किधर जा रहे हो?"

मूनाचर बोला — "मैं एक कुत्ते की तलाश में हूँ जो मेरे लिये हिरन लायेगा। हिरन पानी में तैरेगा, पानी झंडी को गीला करेगा, झंडी मैं कुल्हाड़ी पर लगाऊँगा, कुल्हाड़ी डंडा काटेगी, डंडे से मैं

रस्सी बनाऊँगा और उस रस्सी से मैं मानाचर को फाँसी लगाऊँगा क्योंकि मानाचर ने मेरी सारी रसभरियाँ खा ली हैं।"

कुत्ता बोला — "तुम मुझे तब तक नहीं पा सकोगे जब तक तुम मेरे पंजों में मक्खन नहीं लगाओगे।" सो मूनाचर मक्खन ढूँढने चल दिया।

आगे जा कर उसे मक्खन मिला तो उसने पूछा — "मूनाचर भाई, कहाँ चल दिये?"

मूनाचर बोला — "मैं मक्खन की तलाश में हूँ। मैं मक्खन कुत्ते के पंजों में लगाऊँगा, कुत्ता मेरे लिये हिरन ले कर आयेगा, हिरन पानी में तैरेगा, पानी झंडी को गीला करेगा।

झंडी मैं कुल्हाड़ी पर लगाऊँगा, कुल्हाड़ी डंडा काटेगी, डंडे से मैं रस्सी बनाऊँगा और उस रस्सी से मैं मानाचर को फाँसी लगाऊँगा क्योंकि मानाचर ने मेरी सारी रसभरियाँ खा ली हैं।"

मक्खन बोला — "मुझे पाने के लिये तुम्हें एक बिल्ली लानी पड़ेगी जो मुझे खुरचेगी।" सो मूनाचर एक बिल्ली के पास पहुँचा।

बिल्ली ने पूछा — "कैसे आना हुआ मूनाचर भाई?"

मूनाचर बोला — "मुझे एक बिल्ली चाहिये जो मेरे लिये मक्खन खुरचेगी। मैं मक्खन कुत्ते के पंजों में लगाऊँगा, कुत्ता मेरे लिये हिरन ले कर आयेगा, हिरन पानी में तैरेगा, पानी झंडी को गीला करेगा।

झंडी मैं कुल्हाड़ी पर लगाऊँगा, कुल्हाड़ी डंडा काटेगी, डंडे से मैं रस्सी बनाऊँगा और उस रस्सी से मैं मानाचर को फाँसी लगाऊँगा क्योंकि मानाचर ने मेरी सारी रसभरियाँ खा ली हैं।"

बिल्ली बोली — "तुम मुझे नहीं पा सकते जब तक तुम मुझे दूध नहीं पिलाओगे।" सो मूनाचर एक गाय के पास आया।

गाय बोली — "तुम सुखी रहो मूनाचर भाई, किधर चल दिये?"

मूनाचर बोला — "मैं एक गाय की तलाश में हूँ जिसका दूध बिल्ली पियेगी। बिल्ली मेरे लिये मक्खन खुरचेगी, मैं मक्खन कुत्ते के पंजों में लगाऊँगा, कुत्ता मेरे लिये हिरन ले कर आयेगा, हिरन पानी में तैरेगा, पानी झंडी को गीला करेगा।

झंडी कुल्हाड़ी पर लगेगी, कुल्हाड़ी डंडा काटेगी, डंडा रस्सी बनायेगा और उस रस्सी से मैं मानाचर को फाँसी लगाऊँगा क्योंकि मानाचर ने मेरी सारी रसभरियाँ खायी हैं।"

गाय बोली — "मेरा दूध पाने के लिये तुमको भूसे वालों से भूसा लाना पड़ेगा।" सो मूनाचर भूसे वालों के पास पहुँचा।

भूसे वाले बोले — "किसकी तलाश में घूम रहे हो मूनाचर भाई?"

मूनाचर बोला — "मुझे थोड़े से भूसे की तलाश है। यह भूसा मैं गाय को खिलाऊँगा। गाय मुझे दूध देगी, मैं वह दूध बिल्ली को

पिलाऊँगा, बिल्ली मेरे लिये मक्खन खुरचेगी, मैं मक्खन कुत्ते के पंजों में लगाऊँगा, कुत्ता मेरे लिये हिरन ले कर आयेगा, हिरन पानी में तैरेगा, पानी झंडी को गीला करेगा।

झंडी कुल्हाड़ी पर लगेगी, कुल्हाड़ी डंडा काटेगी, डंडा रस्सी बनायेगा और उस रस्सी से मैं मानाचर को फाँसी लगाऊँगा क्योंकि मानाचर ने मेरी सारी रसभरियाँ खा ली हैं।"

भूसे वाला बोला — "मूनाचर भाई, हम तुमको भूसा तब तक नहीं दे सकते जब तक तुम उस चक्की वाले से हमको केक बनाने का सामान न ला दो।" सो मूनाचर चक्की वाले के पास चल दिया।

चक्की वाले ने पूछा — "मूनाचर भाई इधर कैसे आना हुआ?"

मूनाचर बोला — "मुझे केक बनाने के समान की तलाश है। यह सामान मैं भूसे वालों को दूँगा।

भूसे वाले मुझे भूसा देंगे, भूसा मैं गाय को खिलाऊँगा, गाय मुझे दूध देगी, दूध बिल्ली पियेगी, बिल्ली मेरे लिये मक्खन खुरचेगी, मैं मक्खन कुत्ते के पंजों में लगाऊँगा, कुत्ता मेरे लिये हिरन ले कर आयेगा, हिरन पानी में तैरेगा, पानी झंडी को गीला करेगा।

झंडी कुल्हाड़ी पर लगेगी, कुल्हाड़ी डंडा काटेगी, डंडा रस्सी बनायेगा और उस रस्सी से मैं मानाचर को फाँसी लगाऊँगा क्योंकि मानाचर ने मेरी सारी रसभरियाँ खा ली हैं।"

चक्की वाला बोला — "जब तक तुम मुझे इस चलनी में उस नदी से पानी भर कर नहीं लाते तब तक मैं तुमको केक बनाने का सामान नहीं दे सकता।"

मूनाचर चलनी ले कर नदी पर पहुँचा। वहाँ उसने चलनी में पानी भरने की बहुत कोशिश की पर जैसे ही वह चलनी में पानी में भर कर उसे ऊपर उठाता सारा पानी उसके छेदों में से निकल जाता। ऐसा उसने कई बार किया और हर बार उसका पानी चलनी के छेदों से हो कर नीचे बह गया।

इतने में एक कौआ ऊपर से उड़ा जा रहा था। मूनाचर को चलनी में पानी भरते देख कर बोला — "पोतो, पोतो।" मूनाचर को उसकी बात समझ में आ गयी।

उसने पास पड़ी लाल मिट्टी उठायी और नदी के किनारे लगी घास उखाड़ी और दोनों को ठीक से मिला कर चलनी के ऊपर पोत दिया। कुछ देर में चलनी के छेद बन्द हो गये और चलनी में पानी भर गया।

पानी ला कर उसने चक्की वाले को दिया,
चक्की वाले ने उसको केक बनाने का सामान दिया,
केक बनाने का सामान ले जा कर उसने भूसे वालों को दिया,
भूसे वालों ने उसे भूसा दिया, भूसा उसने गाय को खिलाया,

गाय ने उसे दूध दिया, दूध उसने बिल्ली को पिलाया,
बिल्ली ने मक्खन खुरचा, मक्खन उसने कुत्ते के पंजों पर लगाया,
कुत्ता हिरन के पीछे भागा, हिरन पानी में तैरा,
पानी ने पत्थर को गीला किया, पत्थर ने कुल्हाड़ी तेज की,
कुल्हाड़ी ने डंडा काटा, डंडे से मूनाचर ने रस्सी बनायी

और जब तक यह सब हुआ तब तक तो मानाचर बहुत दूर निकल गया था। बेचारा मूनाचर।

कई और देशों में भी ऐसी कहानियॉ मिलती हैं।

10 डोनाल्ड और उसके पड़ोसी[40]

एक बार की बात है कि आयरलैंड के एक गॉव में हडिन, डडिन और डोनाल्ड[41] नाम के तीन आदमी पास पास रहते थे।

तीनों के पास अपने अपने बैल थे, अपने अपने खेत थे और वे अपनी अपनी खेती करते थे। डोनाल्ड अपने खेत में बहुत मेहनत करता था और उसकी फसल भी बहुत अच्छी होती थी इसलिये धीरे धीरे वह बहुत अमीर हो गया।

हडिन और डडिन से उसकी अमीरी देखी नहीं गयी और एक दिन उन्होंने डोनाल्ड के एक बैल को मार दिया। डोनाल्ड बहुत दुखी हुआ पर कुछ कर नहीं सकता था। इसलिये सब्र करके उसने अपने मरे हुए बैल की खाल निकाली और उसे कन्धे पर रख कर बाजार में बेचने चल दिया।

रास्ते में एक मैना[42] उस बैल की खाल पर आ कर बैठ गयी और उस खाल में लगा मॉस खाने लगी। साथ में वह डोनाल्ड से बातें भी करती जाती थी।

क्योंकि वह आदमी की आवाज में उससे बात कर रही थी तो उसको लगा कि उसको उसकी कुछ बातें समझ में आ रही हैं सो

[40] Donald and His Neighbors – a folktale from Ireland, Europe
[41] Hudden, Dudden and Donald – names of the three neighbors
[42] Translated for the word “Magpie” bird

उसने तुरन्त हाथ घुमा कर उसको पकड़ कर अपनी जेब में रख लिया।

बाजार में जा कर उसने अपने बैल की खाल बेची और फिर शराब पीने के लिये एक होटल में घुस गया।

जब वहॉ की मालकिन उसे अन्दर कमरे में ले जा रही थी तो उसने उस चिड़िया को ज़रा सा दबा दिया। दबाने से चिड़िया के मुँह से कुछ टूटे फूटे शब्द निकल पड़े।

होटल की मालकिन उन शब्दों को सुन कर आश्चर्य में पड़ गयी और बोली — "अरे यह मैं क्या सुन रही हूँ? लगता है कि कोई बात कर रहा है पर फिर भी मैं कुछ समझ नहीं पा रही हूँ।"

डोनाल्ड बोला — "आप ठीक कह रही हैं। मेरे पास एक चिड़िया है जो मुझे सब कुछ बताती है। मैं इसे हमेशा अपने पास रखता हूँ। इस समय यह यह कह रही है कि आप जो मुझे शराब दे रही हैं आपके पास उससे भी अच्छी शराब है।"

मालकिन बोली — "अजीब बात है, यह तो बिल्कुल ठीक बोल रही है। क्या तुम मुझे यह चिड़िया बेचोगे?"

डोनाल्ड बोला — "हॉ मैं इसे बेच सकता हूँ अगर मुझे इसके अच्छे दाम मिल जायें तो।"

मालकिन बोली — "मैं तुम्हारा टोप चॉदी के सिक्कों से भर दूँगी।"

डोनाल्ड ने खुशी खुशी वह चिड़िया उस होटल की मालकिन को बेच दी और घर चला गया।

कुछ देर बाद ही वह हडिन और डडिन से मिला और उनसे बोला — "तुम लोग सोच रहे होगे कि शायद तुमने मेरे साथ बुरा किया है पर नहीं, तुमने तो यह सब मेरे अच्छे के लिये ही किया था। देखो न उस बैल की खाल से मुझे कितने सारे पैसे मिल गये।" कह कर उसने उनको अपना चॉदी के सिक्कों से भरा टोप दिखा दिया।

वह फिर बोला — "केवल एक खाल के इतने सारे पैसे तुम लोगों ने तो कभी देखे भी नहीं होंगे।"

उस रात हडिन और डडिन ने भी अपने अपने बैलों को मार डाला और अगले दिन उनकी खालें बेचने के लिये बाजार चल दिये। पर काफी भाव ताव करने के बाद भी उन लोगों को उन खालों का बहुत ही कम पैसा मिला।

आखिरकार उतने ही पैसे से सन्तुष्ट हो कर बड़े गुस्से में वे घर पहॅुचे। वे डोनाल्ड से इस बात का बदला लेना चाहते थे। डोनाल्ड को भी इस बात का पता था कि वे लोग जरूर ही कुछ न कुछ गड़बड़ घोटाला करेंगे।

यह भी हो सकता था कि वे उसका पैसा चुरा लें या फिर उसे सोते में मार दें। मारने के डर से उसने अपनी बूढ़ी मॉ को अपने बिस्तर में सुला दिया।

उसका ख्याल ठीक था। हडिन और डडिन उसका पैसा चुराने और उसको मारने के लिये उस रात उसके घर आये। उन्होंने यह सोचते हुए उसकी मॉ का गला घोट दिया कि वे डोनाल्ड को मार रहे थे। पर डोनाल्ड ने जब कुछ शोर मचाया तो वे उसका पैसा लिये बिना ही भाग गये।

अगले दिन डोनाल्ड अपनी मरी हुई मॉ को अपने कन्धे पर डाल कर शहर ले चला। रास्ते में एक कुँए पर रुक कर उसने अपनी मॉ के शरीर को एक डंडे के सहारे इस तरह खड़ा कर दिया जिससे ऐसा लग रहा था कि जैसे वह कुँए पर पानी पीने के लिये खड़ी हो।

फिर वह पास के एक शराबखाने में घुस गया और वहॉ पास में खड़ी एक स्त्री से बोला — "क्या आप मेरे ऊपर एक मेहरबानी करेंगी? मेरी मॉ बाहर कुँए के पास खड़ी है उसको अन्दर आने को कहियेगा।

वह थोड़ा कम सुनती हैं सो अगर वह एक बार में ठीक से न सुनें तो उन्हें थोड़ा हिला लीजियेगा और कहियेगा कि वह यहॉ आ जायें।"

वह स्त्री बाहर आयी और उसकी मॉ से कई बार अन्दर आने को कहा परन्तु उसको लगा कि उसकी बात का तो उसके ऊपर कोई असर ही नहीं पड़ रहा है तो उसने उसको थोड़ा सा हिलाया।

पर यह क्या? उसके छूते ही वह सिर के बल कुँए में गिर गयी और डूब गयी। वह स्त्री इस घटना से बहुत ही डर गयी। उसने तुरन्त ही जा कर डोनाल्ड को यह सब कुछ बताया।

डोनाल्ड सिर पर हाथ मार कर बोला — "अरे यह आपने क्या किया?"

और तुरन्त ही बाहर जा कर उसने कुँए से अपनी माँ का शरीर बाहर निकाला। वह उसकी मौत पर दुखी हो कर रोने लगा।

इस तरह डोनाल्ड तो केवल दुखी होने का बहाना कर रहा था पर उस स्त्री की हालत बहुत ही खराब थी। वह अपने आपको डोनाल्ड की माँ का हत्यारा समझ रही थी।

उस शहर के लोगों ने डोनाल्ड को इस दुर्घटना के बहुत सारे पैसे दिये और इस तरह डोनाल्ड पहले से भी कहीं ज़्यादा पैसे ले कर घर लौटा।

घर आ कर उसने पहले की तरह से हडिन और डडिन को अपने पैसों के बारे में बताया और बोला — "तुम लोग कल रात मुझे मारने के लिये आये थे न, पर यह मेरे लिये अच्छा हुआ कि वह सब मेरी माँ पर गुजरा। अब मुझे बारूद बनाने के लिये काफी पैसे मिल गये।"

उसी रात हडिन और डडिन दोनों ने अपनी माँ को मार दिया और अगली सुबह उनके मरे हुए शरीरों को अपने अपने कन्धों पर डाल कर शहर ले चले।

शहर पहुँच कर वे आवाज लगाने लगे — "इन औरतों को बारूद के बदले में कौन खरीदेगा?" सभी उनकी बात पर हँस पड़े और बच्चों ने उनको मार पीट कर भगा दिया।

अब उन्होंने फिर से डोनाल्ड से बदला लेने का फैसला किया।

वे जब घर लौटे तो उन्होंने देखा कि डोनाल्ड नाश्ता कर रहा है। वे पीछे से आये, उन्होंने डोनाल्ड को एक थैले में डाला और नदी की तरफ ले चले।

रास्ते में उनको सामने ही एक खरगोश दिखायी पड़ गया। खरगोश देख कर उन्होंने थैला तो सड़क पर रख दिया और उस खरगोश को पकड़ने दौड़ पड़े।

उन्होंने सोचा कि खरगोश जल्दी ही पकड़ में आ जायेगा तो क्यों न उसको भी रास्ते में पकड़ लिया जाये परन्तु वह खरगोश तो भागता ही चला गया और उसके पीछे भागते भागते वे भी काफी दूर निकल गये।

इधर जब कुछ देर हो गयी तो डोनाल्ड ने थैले में बैठे बैठे गाना गाना शुरू कर दिया। एक आदमी सड़क पर से गुज़र रहा था कि उसने थैले में से गाने की आवाज सुनी तो वह रुक गया।

उसने पूछा — "यह क्या मामला है कि तुम थैले में बन्द हो और गाना गा रहे हो?"

डोनाल्ड बोला — "मैं स्वर्ग जा रहा हूँ और बहुत जल्दी ही मैं इन सब मुश्किलों से आजाद हो जाऊँगा।"

वह आदमी बोला — "अगर मैं तुम्हारी जगह इस थैले बन्द हो जाऊँ तो तुम मुझसे क्या लोगे?"

डोनाल्ड बोला — "कह नहीं सकता पर इसके लिये तुम्हें काफी पैसा देना पड़ेगा क्योंकि स्वर्ग जाना कोई आसान काम नहीं है।"

वह आदमी बोला — "मेरे पास ज़्यादा पैसे तो नहीं हैं पर मेरे पास बीस जानवर हैं जो मैं तुमको दे सकता हूँ। चलेगा?"

डोनाल्ड बोला — "ठीक है मैं बीस जानवरों से ही काम चला लूँगा।"

आदमी ने खुशी खुशी थैला खोल कर डोनाल्ड को बाहर निकाल दिया। बाद में डोनाल्ड ने उस आदमी को उस थैले मे बन्द कर दिया और उसके बीस बढ़िया जानवर ले कर घर आ गया।

कुछ देर बाद हडिन और डडिन खरगोश पकड़ कर लौटे और उस थैले को अपनी पीठ पर लाद कर चलने लगे। यह समझते हुए कि उस थैले में अभी भी डोनाल्ड बन्द है उन्होंने उस थैले को नदी में फेंक दिया। वह थैला तुरन्त ही पानी में डूब गया।

वे जल्दी जल्दी घर लौटने लगे ताकि डोनाल्ड की जायदाद पर जल्दी ही कब्जा कर सकें, पर यह क्या? घर आ कर तो वे आश्चर्य में पड़ गये क्योंकि उन्होंने देखा कि डोनाल्ड तो घर में है और उसके पास कई सारे अच्छे किस्म के जानवर भी हैं जो पहले उसके पास कभी नहीं थे।

उन्होंने आ कर डोनाल्ड से पूछा — "अरे डोनाल्ड, यह क्या? हम तो समझे कि तुम डूब गये हो परन्तु तुम तो यहाँ हमारे सामने खड़े हो।"

डोनाल्ड बोला — "ओह हाँ, वहाँ तो मैं डूब ही गया था पर मुझे वहाँ डुबो कर तुमने मेरी बड़ी सहायता की क्योंकि वहाँ मुझे ये जानवर और सोना मिल गया था पर मैं उनमें से केवल एक ही चीज़ ले सकता था सो मैं जानवर ले कर चला आया पर सोना अभी भी वहीं पड़ा हुआ है।"

यह सुन कर दोनों के मन में लालच आ गया। उन्होंने फिर से कसम खायी कि वे डोनाल्ड के दोस्त बने रहेंगे पर वह किसी तरह उनको वह सोना दिलवा दे।

डोनाल्ड इस बार उनको नदी में उस जगह पर ले गया जहाँ वह नदी सबसे ज़्यादा गहरी थी।

उसने एक पत्थर उठाया और उसको नदी में फेंकते हुए बोला — "देखो, यही वह जगह है जहाँ पर सोना है। अब तुम ऐसा करो कि तुममें से एक इस जगह पर कूद जाओ और अगर तुमको किसी सहायता की जरूरत हो तो दूसरे को पुकार लेना।"

यह सुन कर हडिन तुरन्त ही उस जगह पर कूद गया। कुछ ही पल बाद वह ऊपर आ गया और ऐसी आवाज में कुछ बोला जैसे कोई डूबता आदमी बोलता है।

डडिन ने डोनाल्ड से पूछा — "यह क्या कह रहा है?"

डोनाल्ड बोला — "अरे, कह क्या रहा है सोना निकालने में तुम से सहायता मॉग रहा है, और क्या कह रहा है।

यह सुन कर डडिन भी हडिन के साथ ही नदी में कूद गया और दोनों नदी में डूब कर मर गये। डोनाल्ड दोनों की बेवकूफी पर हॅसता हुआ घर वापस आ गया।

11 लो अर्न के सुनहरी सेब[43]

यह उस समय की बात है जब आयरलैंड के पश्चिमी प्रान्तों का कोई नाम नहीं हुआ करता था। बस जो कोई भी वहॉ पहले बस जाता था उसी के नाम से वह जगह जानी जाती थी जब तक कि वह मर नहीं जाता था। फिर वही जगह दूसरे आदमी के नाम से जानी जाती थी जो कोई वहॉ रहने आ जाता था।

वहॉ एक राजा राज करता था जिसका नाम था कौन[44]। उस की पत्नी बिटेन की थी जिसका नाम था ऐडा[45]। कौन के राज्य में किसी भी बात की कोई कमी नहीं थी इसलिये उसकी सारी जनता आनन्द से अपने दिन बिता रही थी।

उन दोनों के एक बेटा था जिसका नाम उन्होंने कौन–ऐडा रख दिया क्योंकि किसी ज्योतिषी ने उनको बताया था कि उस लड़के के अन्दर उसके माता और पिता दोनों के गुण आयेंगे।

जैसे जैसे कौन–ऐडा बड़ा होता गया उसके अन्दर सचमुच में ही उसके माता और पिता दोनों के गुण दिखायी देने लगे।

पर उसी समय बदकिस्मती से ऐडा बहुत बीमार पड़ी और उसी बीमारी में वह चल बसी। राजा और उसकी जनता ने रानी की मौत

[43] Story of Conn Edda, or Lough Earne's Golden Apples – a folktale of Ireland, Europe
[44] Conn – name of the King
[45] Edda – name of Conn's wife

का एक साल तक बहुत दुख मनाया और फिर ज्योतिषियों के समझाने पर राजा ने दूसरी शादी कर ली।

नयी रानी बहुत अच्छी थी। बरसों तक वह पुरानी रानी की तरह ही रही और सभी उससे बहुत खुश थे।

इस बीच उसके कई बच्चे हुए पर कुछ साल बाद ही उसको लगने लगा कि राजा कौन–ऐडा को बहुत चाहता है और बाद में भी वह उसी को राजगद्दी देगा और उसके अपने बच्चों की परवाह नहीं करेगा।

यह सोच कर रानी बहुत परेशान हुई। रानी की यह परेशानी इतनी बढ़ी कि उसने कौन–ऐडा को मारने का फैसला कर लिया। वह एक जादूगरनी के पास पहुँची और उसको अपने आने की वजह बतायी।

जादूगरनी वह सब सुन कर बोली — "अगर मैं तुम्हारा यह काम कर दूँ तो तुम मुझे क्या इनाम दोगी?"

रानी बोली — "जो तुम चाहो।"

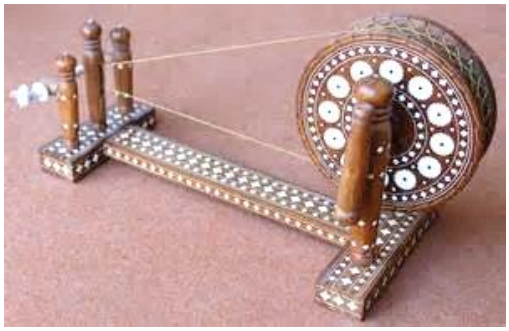

जादूगरनी बोली — "तुमको मेरी बाँह से बनी खाली जगह रुई से भरनी पड़ेगी और जहाँ मैं अपने तकुए[46] से छेद करूँगी वहाँ लाल गेहूँ भरना पड़ेगा।"

[46] Takuaa is an iron needle which is a part of Charakhaa which spins the cotton to make its thread. In the picture it is on the left side where the white cotton can be seen wrapped around it.

रानी बोली — "मैं तैयार हूँ।"

जादूगरनी ने अपने घर के पास अपनी बॉह को नीचे जमीन पर रख कर एक छेद सा बना लिया और अपना घर रुई से भरवा लिया।

फिर वह अपने भाई के घर पर चढ़ गयी। वहॉ उसने तकुए से छेद किया और उसके घर को उसने लाल गेहूँ से भरवा लिया। इस सबको करने के बाद वह रानी बोली — "अब तुमको अपना इनाम मिल गया अब तुम मेरा काम करो।"

जादूगरनी बोली — "तुम यह शतरंज[47] ले जाओ और राजकुमार के साथ शतरंज खेलो। पहले ही खेल में तुम जीत जाओगी पर खेलने से पहले तुम एक शर्त रखना, वह यह कि जो कोई भी बाजी जीतेगा वह हारने वाले से कोई भी काम करा सकता है।

जब तुम बाजी जीत जाओ तब तुम उससे कहना कि या तो वह तुमको एक साल और एक दिन के अन्दर अन्दर फ़िरबोल्ग[48] के बाग में लगे तीन सुनहरे सेब, उसका काला घोड़ा

[47] Chess – a game. See the picture above

[48] Firbolg

और उसका अनोखी ताकत वाला कुत्ता ला कर दे और वह अगर यह काम नहीं कर सकता तो फिर कभी तुमको अपनी शक्ल न दिखाये।

फ़िरबोल्ग लो अर्न[49] में रहता है और इन सबकी इतनी ज़्यादा देखभाल करता है कि उसके महल में से इनको लाना मुश्किल ही नहीं बल्कि नामुमकिन है।

वह खुद अपनी ताकत से इनको नहीं ला सकता और अगर लाने की कोशिश की तो उसको जान से हाथ धोना पड़ेगा।"

रानी यह सुन कर बहुत खुश हुई और वह जादूगरनी से शतरंज ले कर घर चली गयी। घर पहुँचते ही उसने राजकुमार को शतरंज खेलने के लिये बुलाया और दोनों शतरंज खेलने बैठे।

जैसा कि जादूगरनी ने कहा था रानी शतरंज की पहली ही बाजी जीत गयी।

परन्तु वह राजकुमार को पूरी तरह से अपने कब्जे में करना चाहती थी इसलिये उसने दूसरी बाजी बिछा दी। परन्तु आश्चर्य, दूसरी बाजी राजकुमार बिना किसी कोशिश के ही जीत गया।

राजकुमार बोला — "क्योंकि पहली बाजी आप जीती थीं इसलिये पहले आप अपनी शर्तें बताइये।"

रानी बोली — "मेरी शर्त यह है कि तुम मुझको एक साल और एक दिन के अन्दर अन्दर फ़िरबोल्ग के बाग में लगे तीन सुनहरे

[49] Lough Erne – a place in Ireland

सेब, उसका काला घोड़ा और उसका अनोखी ताकत वाला कुत्ता ला कर दो और अगर यह काम न कर सको तो देश छोड़ कर चले जाओ, और या फिर मरने के लिये तैयार हो जाओ।"

राजकुमार बोला — "ठीक है। अब आप मेरी शर्त सुनें। जब तक मैं लौट कर आऊँ आप पास वाली मीनार की चोटी पर बैठें और उतना ही लाल गेहूँ खायें जितना कि आपका तकुआ उठा सकता है और कुछ भी नहीं।

और अगर मैं एक साल और एक दिन तक न लौटूँ तो समय पूरा होने पर आप आजाद हैं।"

कौन–ऐडा को लम्बा सफर करना था सो वह रानी को मीनार की खुली छत पर एक साल और एक दिन के लिये बिठा कर चल दिया।

उसको मालूम था कि वह खुद अपनी ताकत से तो इन चीजों को पा नहीं सकता इसलिये वह अपने एक जादूगर दोस्त फ़ियोन डाढना[50] के पास सलाह करने जा पहुँचा। फ़ियोन डाढना ने उसका प्रेम से स्वागत किया, गरम पानी से उसके पैर धोये, कुछ खिलाया पिलाया और फिर उससे उसके वहाँ आने की वजह पूछी।

कौन–ऐडा ने उसको अपनी सारी कहानी बता कर पूछा — "अब यह बताओ कि तुम मेरी इसमें क्या सहायता कर सकते हो?"

[50] Fionn Dadhna

फ़ियोन डाढना बोला — "मैं अभी तो तुम्हारी कोई सहायता नहीं कर सकता पर कल सुबह मैं अपने हरे कमरे में जाऊँगा और जादू से पता करूँगा कि मैं तुम्हारी क्या सहायता कर सकता हूँ।"

अगले दिन जब सुबह हुई, सूरज उगा तो फ़ियोन डाढना ने अपने जादू से अपनी पूजा से अपने देवता से बात की।

बाद में उसने कौन–ऐडा को बुला कर कहा — "दोस्त, तुम एक भारी परेशानी में पड़ गये हो। यह जाल तुमको मारने के लिये बिछाया गया है।

क्योंकि धरती पर लौ कौरिब की सबसे बड़ी जादूगरनी कैल्लीच[51] जो लो अर्न के राजा की बहिन है और आजकल यहीं आयरलैंड में है, वही रानी को ऐसी सलाह दे सकती है।

वह जादूगरनी मेरी और मैं जिस देवता की पूजा करता हूँ उसकी, हम दोनों की ताकत से बाहर है। पर तुम उम्मीद न छोड़ो।

ऐसा करो कि तुम आदमी के सिर वाली चिड़िया स्लियाभ मिस[52] के पास चले जाओ। उसके बस में अगर कुछ होगा तो वह तुम्हारे लिये जरूर कर देगी। क्योंकि इस पश्चिमी दुनियाँ में उसके जैसी चिड़िया और कोई नहीं है।

वह भूत, वर्तमान और भविष्य सबके बारे में सब कुछ जानती है। वह कहाँ रहती है यह जानना थोड़ा मुश्किल काम है पर सबसे

[51] Cailleach of Lough Corrib
[52] Sliyabh Mis, the bird

ज़्यादा मुश्किल काम है उससे जवाब पाना। पर मैं कोशिश करता हूँ।

तुम इस लम्बे बालों वाले छोटे घोड़े पर बैठ कर चले जाओ क्योंकि वह चिड़िया तुमको तीन दिन बाद दिखायी देगी। यह घोड़ा तुमको उसके रहने की जगह तक ले जायेगा।

हो सकता है कि वह चिड़िया तुम्हारे सवालों के जवाब देने से इनकार कर दे। ऐसी हालत में तुम यह रत्न रखो। यह तुम उसको भेंट में दे देना। इस भेंट को पा कर वह तुम्हें तुम्हारे सवालों के जवाब जरूर दे देगी।"

राजकुमार ने अपने जादूगर दोस्त को बहुत बहुत धन्यवाद दिया और उससे रत्न ले कर उस छोटे से लम्बे बालों वाले घोड़े पर बैठ कर चल दिया।

जैसा कि उसके दोस्त ने बताया था वह तीन दिन में ही चिड़िया के पास पहुँच गया। जा कर उसने चिड़िया को रत्न भेंट किया और अपना सवाल पूछा।

चिड़िया ने पत्थर पर रखा हुआ रत्न अपनी चोंच में उठाया और एक ऊँची चट्टान पर जा बैठी और आदमी की आवाज में बोली — "ए कौन–ऐडा, कुआचेन[53] के राजा के बेटे, अपने दाहिने पॉव के नीचे का पत्थर हटाओ। उसके नीचे एक गेंद और एक प्याला रखा है। उसे उठा लो।

[53] Cruachen

फिर घोड़े पर चढ़ कर उस गेंद को अपने घोड़े के सामने फेंको। उसके बाद तुम्हारा घोड़ा ही तुमको बता देगा कि तुमको क्या करना है।" इतना कह कर चिड़िया तुरन्त उड़ कर वहॉ से चली गयी।

राजकुमार ने बड़ी सॅभाल कर चिड़िया के बताये अनुसार सब कुछ किया। गेंद एक तरफ को लुढ़कती चली गयी और उसका घोड़ा उस गेंद के पीछे पीछे चल दिया।

वह घोड़ा उसको लो अर्न के राज्य की हद तक ले आया। वहॉ आ कर वह गेंद झील के पानी में चली गयी और गायब हो गयी।

अब घोड़ा बोला — "देखो, अब तुम मेरे कान में हाथ डाल कर वहॉ से एक छोटी बोतल और एक टोकरी निकाल लो और मुझे तेज़ी से भगा ले चलो क्योंकि अब तुम्हारे सामने बहुत सारी मुश्किलें आने वाली हैं।"

कौन–ऐडा ने घोड़े को बहुत बहुत धन्यवाद दिया और उसने घोड़े के कान में हाथ डाल कर एक छोटी बोतल और एक टोकरी निकाल ली।

जब वह घोड़े पर बैठा जा रहा था तो झील का पानी उसके सिर के ऊपर छत की तरह दिखायी दे रहा था। लगता था घोड़ा झील के अन्दर घुस गया था। झील में घुसने के बाद उसको वह गेंद फिर दिखायी दे गयी थी।

चलते चलते अब वे एक ऐसी जगह आ गये थे जहॉ से एक रास्ता जाता था और उस रास्ते पर तीन डरावने सॉप पहरा दे रहे थे।

घोड़ा बोला — "देखो, टोकरी खोलो और उसमें से तीन मॉस के टुकड़े इन तीनों सॉपों के मुँह में डाल दो और फिर मेरे ऊपर ठीक से बैठ जाओ ताकि हम इन सॉपों के बीच से गुजर सकें।

अगर तुम इन तीनों सॉपों के मुँह में मॉस के टकड़े ठीक से डाल सके तो हम लोग इनके बीच से ठीक से गुजर जायेंगे नहीं तो बस समझो कि गये।"

कौन–ऐडा का निशाना अच्छा था सो उसने तीनों मॉस के टुकड़े उन तीनों सॉपों के मुँह में ठीक से डाल दिये। यह देख कर घोड़ा बोला — "तुम्हारी विजय हो राजकुमार।"

और यह कहते हुए उसने छलॉग लगा दी। उस छलॉग में उसने नदी और सॉपों द्वारा रक्षित दोनों ही जगहें पार कर दीं।

घोड़े ने पूछा — "कौन–ऐडा, तुम मेरे ऊपर बैठे हो न?"

राजकुमार बोला — "यह काम तो मेरी आधी ताकत से ही हो गया।"

घोड़ा बोला — "तुम बहुत बहादुर राजकुमार लगते हो। एक खतरा तो हमने जीत लिया पर अभी दो खतरे और बाकी हैं। भगवान ने चाहा तो तुम उनको भी जीत लोगे।"

वे गेंद के पीछे पीछे आगे बढ़ते जा रहे थे। चलते चलते वे एक ऐसे पहाड़ के पास आ गये जो आग उगल रहा था। घोड़ा बोला — "राजकुमार, अब तुम इस खतरनाक कूद के लिये तैयार हो जाओ।"

राजकुमार डर के मारे कॉप गया। उससे कोई जवाब नहीं बन पा रहा था। वह जितनी अच्छी तरह से हो सकता था घोड़े की पीठ को कस कर पकड़ कर बैठ गया।

घोड़े ने दूसरी कूद लगायी और आग उगलते हुए पहाड़ के दूसरी ओर कूद गया। घोड़ा फिर बोला — "कौनमौर के बेटे कौन-ऐडा, तुम ठीक तो हो न?"

राजकुमार बोला — "बस ज़िन्दा हूँ क्योंकि मैं आग से बहुत झुलस गया हूँ।"

घोड़ा बोला — "क्योंकि तुम ज़िन्दा हो इसी लिये मैं कहता हूँ कि तुम अपने काम में जरूर ही सफल होगे। हमारे भयानक खतरे टल गये हैं और आशा है कि अब हम तीसरा और आखिरी खतरा भी ठीक से पार कर लेंगे।"

कुछ दूर और चलने के बाद घोड़ा बोला — "देखो, बोतल में से मरहम निकाल कर अपने घावों पर लगा लो।"

राजकुमार ने घोड़े की बात मान कर ऐसा ही किया। मरहम लगाते ही उसके सारे घाव भर गये और वह पहले की तरह से ठीक हो गया।

वे गेंद के पीछे पीछे चलते एक शहर के पास आ गये थे। उस शहर के चारों तरफ ऊँची ऊँची दीवार खड़ी थी।

उस शहर में घुसने का केवल एक ही दरवाजा दिखायी दे रहा था और वह दरवाजा भी हथियारबन्द लोगों से रक्षित नहीं था बल्कि दो ऊँची ऊँची मीनारों से सुरक्षित था जिनमें से आग निकल रही थी।

घोड़ा यहाँ आ कर रुक गया और राजकुमार से बोला — "मेरे दूसरे कान में से एक चाकू निकाल लो। मुझे मार डालो और मेरा पेट चीर कर उसमें बैठ जाओ। इस तरह तुम बिना किसी तकलीफ के इन मीनारों के बीच में से निकल जाओगे।

अन्दर शहर में जा कर जब तुम्हारी इच्छा हो तब बाहर निकल आना। एक बार तुम शहर के अन्दर पहुँच गये तो फिर तुम जब चाहो बाहर आ सकते हो और जब चाहो अन्दर जा सकते हो।

इसके बदले में मैं तुमसे एक ही प्रार्थना करना चाहूँगा कि जैसे ही तुम दरवाजे में से शहर के अन्दर घुसोगे तुम उन सब शिकारी चिड़ियों को भगा दोगे जो मेरे शरीर को खाने आयेंगीं।

और दूसरे अगर तुम्हारी बोतल में ज़रा सा भी मरहम बचा होगा तो उसे मेरे शरीर पर डाल देना ताकि मेरा शरीर सड़े नहीं। और अगर हो सके तो एक गड्ढा खोद कर मेरे शरीर को उसमें गाड़ देना।"

कौन–ऐडा बोला — "ओ वफादार घोड़े, तुमने मेरी इतनी ज़्यादा सहायता की है कि ऐसा कह कर तुम मेरा अपमान कर रहे हो।

मैं राजकुमार की हैसियत से तुम्हारा बहुत ही आभारी हूँ और यह कहता हूँ कि मेरे ऊपर कितनी भी बड़ी मुसीबत क्यों न आ जाये मैं कभी अपनी दोस्ती को अपनी जान बचाने के लिये कुर्बान नहीं करूँगा। मैं ऐसा नहीं कर सकता जो तुम मुझसे कह रहे हो।"

घोड़ा बोला — "तुम मेरी फिकर न करो, जैसा मैं कहता हूँ वैसा ही करो। भगवान तुमको तुम्हारे काम में सफलता दे।"

राजकुमार बोला — "नहीं, कभी नहीं, मैं ऐसा कर ही नहीं सकता।"

घोड़ा दुखी आवाज में बोला — "राजकुमार, अगर तुम ऐसा नहीं करोगे तो हम दोनों ही बरबाद हो जायेंगे और फिर हम कभी नही मिल पायेंगे पर अगर तुम जैसा मैं कहता हूँ वैसा ही करोगे तो सब कुछ इतना आसान हो जायेगा कि तुम अभी उसे सोच भी नहीं सकते।

मैंने तुम्हें अभी तक कभी धोखा नहीं दिया इसलिये तुम्हें मेरी इस सलाह पर भी शक नहीं करना चाहिये इसलिये जैसा मैं कहता हूँ वैसा ही तुम करो वरना मेरी मौत से भी बदतर हालत होगी। और अगर अब भी तुमने मेरा कहा न माना तो समझ लेना कि हमारी तुम्हारी दोस्ती खतम।"

राजकुमार को घोड़े की बात समझ में आ गयी। और दूसरा कोई उपाय दिखायी न देने पर राजकुमार ने घोड़े के दूसरे कान में से चाकू निकाला और कॉपते हाथों से उसकी गरदन पर चला दिया। राजकुमार की ऑखों से टपाटप ऑसू बह निकले।

पर जैसे ही वह चाकू उसने घोड़े की गरदन में घुसाया वह जैसे किसी जादुई ताकत से वहीं अटक कर रह गया। घोड़ा मर गया और गिर पड़ा।

राजकुमार घोड़े के मरने पर बहुत ज़ोर ज़ोर से रोया और इतना रोया कि रोते रोते बेहोश हो गया। कुछ देर बाद जब उसे होश आया तो उसने घोड़े के कहे अनुसार काम करना शुरू किया।

उसने घोड़े का पेट चीरा। उसकी खाल को उसने उसके शरीर से अलग कर लिया और उसमें छिप कर वह उस शानदार शहर में चला।

वह बिना किसी रोक टोक के उस शहर में घूम रहा था। वह शहर बड़ा और शानदार था पर राजकुमार अपने दोस्त घोड़े के मर जाने से बहुत दुखी था। वह केवल पचास कदम ही चला होगा कि उसको घोड़े की आखिरी बात याद आयी।

वह लौटा तो क्या देखता है कि बहुत सारी मॉस खाने वाली चिड़ियें घोड़े का मॉस खाने पर लगी हुई हैं। उसने कुछ ही पल में वे सारी चिड़ियें भगा दीं और बोतल में से निकाल कर मरहम की कुछ बूँदें उसके शरीर पर डाल दीं।

मरहम की वे बूँदें घोड़े के शरीर पर पड़ते ही उसमें कुछ बदलाव आये और देखते ही देखते वह एक सुन्दर नौजवान में बदल गया। दोनों एक दूसरे से लिपट गये।

जब एक की खुशी कम हुई और दूसरे का आश्चर्य, तो वह नौजवान राजकुमार से बोला — "ओ कुलीन राजकुमार, आज तुमको देख कर मैं धन्य हो गया। मैं लो अर्न शहर के राजा फ़िरबोल्ग का भाई हूँ। उस बदमाश फ़ियोन डाढना ने मुझे घोड़ा बना कर रखा हुआ था।

उसको मुझे तुम्हें देना ही पड़ा क्योंकि मैं अपनी शर्त तोड़ चुका था। फिर भी जैसा मैंने तुमसे कहा था अगर तुमने वैसा नहीं किया होता तो मैं कभी भी अपने इस रूप को वापस नहीं पा सकता था।

वह मेरी ही बहिन थी जिसने तुम्हारी सौतेली माँ को वह सब लाने के लिये कहा जो मेरे भाई के पास है। पर तुम मेरा विश्वास करो कि मेरी बहिन तुमको किसी तरह का नुकसान नहीं पहुँचाना चाहती थी बल्कि तुम्हारा कुछ भला ही करना चाहती थी, यह तुम बाद में जानोगे।

क्योंकि अगर वह तुम्हारा ज़रा भी बुरा चाहती तो बिना किसी कठिनाई के कुछ भी कर सकती थी। पर वह तुमको आगे आने वाले खतरों से भी बचाना चाहती थी और साथ में मुझे भी मेरा पुराना रूप वापस दिलवाना चाहती थी।

आओ, तुम मेरे साथ आओ। घोड़ा, वह अनोखी ताकत वाला कुत्ता और सुनहरी सेब सब कुछ तुम्हारा है। मेरे भाई के घर में तुम्हारा बड़ा शानदार स्वागत किया जायेगा क्योंकि तुम केवल इन्हीं के नहीं बल्कि और बहुत कुछ चीज़ों के भी अधिकारी हो।"

समय गॅवाने की बजाय वे दोनों लो अर्न के राजा के महल की तरफ चल दिये। राजा और उसके दरबारियों ने सचमुच ही उन दोनों का बड़ा शानदार स्वागत किया।

जब राजा ने कौन–ऐडा के आने की वजह सुनी तो उसने कौन–ऐडा को काला घोड़ा, अनोखी ताकत वाला कुत्ता और ज़िन्दगी देने वाले तीन सुनहरे सेब जो उसके बगीचे में लगे थे एक शर्त पर उसको दे दिये कि जब तक उसका एक साल और एक दिन पूरा होता है वह उसका मेहमान बन कर रहेगा।

कौन–ऐडा राजी हो गया और आनन्द से वहॉ रहा।

जब उसके जाने का समय आया तो राजा ने अपने आनन्द भवन के बगीचे के क्रिस्टल के पेड़ से तीन सुनहरी सेब तोड़ कर उसे दे दिये। कुत्ते के गले में चॉदी की एक जंजीर बॉध कर कौन–ऐडा के हाथ में पकड़ा दी और घोड़े के ऊपर उसका साज सजा कर कौन–ऐडा की सवारी के लिये तैयार कर दिया।

राजा ने खुद कौन–ऐडा को उस घोड़े पर चढ़ाया और उसके हाथों में कुत्ते की चॉदी की जंजीर दी।

राजा ने कौन–ऐडा को यह भी यकीन दिलाया कि रास्ते में उसको अब आग उगलने वाला पहाड़, मीनार और दोनों सॉपों से डरने कोई जरूरत नहीं है क्योंकि वह घोड़ा उन सबसे बचा कर उसको उसके देश पहुॅचा देगा।

उन्होंने कौन–ऐडा से भी एक वायदा लिया कि वह हर साल कम से कम एक बार उन लोगों से मिलने जरूर आता रहेगा।

कौन–ऐडा ने दोनों से विदा ली। उसका दोस्त बहुत दुखी था। कौन–ऐडा बिना किसी रोक टोक के आराम से अपने घर पहुॅच गया।

उधर रानी यह सोचे बैठी थी कि कौन–ऐडा तो अब वापस नहीं आयेगा इसलिये राजगद्दी अब उसी के बेटों को मिलेगी। पर जब उसने कौन–ऐडा को काले घोड़े पर सवार और कुत्ते को उसके पीछे आते देखा तो उसकी सारी आशाओं पर पानी फिर गया और वह दुखी हो कर मीनार से कूद गयी। नीचे गिरते ही वह मर गयी।

राजा अपने बेटे को देख कर बहुत खुश हुआ। वह तो एक साल से इसी लिये दुखी था कि पता नहीं उसका बेटा ज़िन्दा भी है या नहीं। जब उसको रानी के बुरे इरादों का पता चला तो गुस्से के मारे उसने रानी का शरीर जला दिया।

कौन–ऐडा ने वे तीनों सेब अपने बगीचे में लगा दिये और उनको बोते ही वहॉ एक हरा पेड़ निकल आया जिसके ऊपर वैसे ही तीन फल लगे थे।

इस पेड़ की मेहरबानी से उनके राज्य में खूब पैदावार होने लगी। घोड़ा और कुत्ता भी राज्य के बहुत काम आये। इसी कौन–ऐडा के नाम पर उस जगह का नाम कौनौट[54] पड़ा।

[54] Cannaught – there is a Cannaught Place in Delhi, India too. Maybe this name has come from there only.

12 निडर आदमी[55]

एक बार की बात है कि एक स्त्री थी जिसके लौरैन्स और कैरौल[56] नाम के दो बेटे थे। लौरैन्स शुरू से ही बड़ा निडर था और कैरौल शाम से ही घर में छिप कर बैठ जाता था।

उन दिनों आयरलैंड में कुछ ऐसा रिवाज था कि जब कभी कोई मर जाता था तो उसकी कब्र की तीन दिन तक रखवाली करनी पड़ती थी क्योंकि रात को कब्रिस्तान में प्रेत आत्माएँ घूमती रहती थीं और कभी कभी वे कब्र से शरीर को चुरा कर भी ले जाती थीं।

जब लौरैन्स और कैरौल की माँ मरी तो इन दोनों को भी अपनी माँ की कब्र की रखवाली करनी थी। कैरौल बोला — "भाई, तुम तो बड़े निडर हो तो आज तुम ही माँ की कब्र की पहरेदारी करो तो जाने।"

लौरैन्स बोला — "तुम क्या समझते हो कि मैं अपनी माँ की कब्र की रखवाली नहीं कर सकता? मेरे अन्दर इतना साहस है कि मैं यह काम बड़े आराम से कर सकता हूँ।" यह कह कर लौरैन्स चला गया।

वह माँ की कब्र के पास पहुँचा और वहाँ पास में पड़े एक पत्थर के ऊपर बैठ कर पहरा देने लगा। बहुत रात बीत गयी। उसे नींद

[55] Dauntless Man – a folktale from Ireland, Europe

[56] Lawrence and Carol – names of the two sons of a woman

भी आने लगी कि उसने देखा कि बिना शरीर का एक सिर लुढ़कता हुआ चला आ रहा है।

वह डरा नहीं। उसने अपनी तलवार निकाल ली कि अगर वह उसके पास आया तो वह उसको अपनी तलवार से काट कर रख देगा। पर वह उसके पास आया ही नहीं।

लौरैन्स भी उसको बराबर देखता रहा। इतने में सवेरा हो गया। वह बिना शरीर का सिर गायब हो गया और इधर लौरेन्स भी अपने घर वापस आ गया।

कैरौल ने पूछा — "भाई, तुमने कब्रिस्तान में कुछ देखा क्या?"

लौरैन्स बोला — "हॉ, देखा तो था, और आज अगर मैं वहॉ न होता तो मेरी मॉ के शरीर की चोरी जरूर हो जाती।"

कैरौल ने फिर पूछा — "जो कुछ तुमने देखा वह ज़िन्दा था कि मुर्दा?"

लौरैन्स बोला — "यह तो मुझे पता नहीं चला क्योंकि वह तो बिना शरीर का एक सिर था।"

कैरौल मुस्कुरा कर बोला — "तुम डरे नहीं?"

लौरैन्स बोला — "नहीं, बिल्कुल भी नहीं। तुम्हें मालूम नहीं क्या कि मैं दुनियॉ में किसी भी चीज़ से नहीं डरता।"

कैरौल बोला — "तो फिर तुम अगर आज फिर से मॉ की कब्र की पहरेदारी करो तो जानूँ?"

लौरैन्स बोला — "आज की यह शर्त मैं तुमसे लगाता हूँ। आज मुझे नींद आ रही है। माँ की कब्र की रखवाली के लिये आज तुम जाओ।"

कैरौल बोला — "मुझे तो अगर कोई दुनियाँ भर का खजाना भी दे न, तो भी मैं यह काम नहीं कर सकता।"

लौरैन्स बोला — "पर अगर आज कब्र की पहरेदारी न की गयी तो माँ का शरीर चला जायेगा।"

कैरौल बोला — "अगर तुम आज और कल के बदले में यह काम कर लो तो फिर मैं तुमसे कभी किसी काम के लिये नहीं कहूँगा। पर मुझे ऐसा लग रहा है कि जैसे तुम कुछ डर गये हो।"

लौरैन्स बोला — "तुमको यह बताने के लिये कि मैं डरा नहीं हूँ मैं दोनों दिन माँ की कब्र की पहरेदारी करूँगा।" और यह कह कर वह सोने चला गया।

शाम होने पर वह उठा, अपनी तलवार सँभाली और कब्रिस्तान की तरफ चल दिया। वह सीधा उसी पत्थर के पास पहुँचा जहाँ वह पिछले दिन बैठा था और उसी पत्थर पर बैठ कर अपनी माँ की कब्र की पहरेदारी करने लगा।

आधी रात के करीब फिर उसको कोई बड़ी सी चीज़ ज़ोर की आवाज के साथ अपनी तरफ आती दिखायी दी। उसने तुरन्त अपनी तलवार निकाली और उससे उसके दो टुकड़े कर दिये। मगर तुरन्त ही वे दोनों टुकड़े गायब भी हो गये।

सुबह होने पर लौरैन्स घर वापस आ गया।

कैरौल ने उससे फिर पूछा — "भाई, आज भी तुमने कहीं कुछ देखा क्या?"

लौरैन्स बोला — "हॉ देखा था और अगर आज भी मैं मॉ की कब्र की पहरेदारी न कर रहा होता तो आज तो मॉ का शरीर उसकी कब्र से ज़रूर ही चला जाता।"

कैरौल ने पूछा — "क्या वही बिना शरीर वाला सिर फिर से वहॉ आया था?"

लौरैन्स बोला — "नहीं, अबकी बार वह तो नहीं था पर वह कोई बड़ी सी काली सी चीज़ थी जो मेरी मॉ की कब्र खोद रही थी तभी मैंने अपनी तलवार से उसके दो टुकड़े कर दिये।"

उस दिन लौरैन्स फिर सो गया और जब वह शाम को उठा तो फिर अपनी तलवार ले कर कब्रिस्तान की तरफ चल दिया। और फिर उसी पत्थर पर बैठ कर मॉ की कब्र की पहरेदारी करने लगा।

इस बार आधी रात के बाद उसे कोई सफेद सी चीज़ आती दिखायी दी। वह तुरन्त ही अपनी तलवार निकाल कर उसे भी मारने के लिये तैयार हो गया।

लौरैन्स ने देखा कि उस सफेद चीज़ के ऊपर एक आदमी का सिर था और उसके दॉत बहुत बड़े थे। जैसे ही लौरैन्स ने उसको मारने के लिये अपनी तलवार उठायी तो वह सिर बोला — "रुक जाओ, तुमने अपने मॉ के शरीर की रक्षा की है और तुम्हारे जैसा

बहादुर आदमी तो इस आयरलैंड की धरती पर और दूसरा कोई है भी नहीं। अगर तुम ढूँढने निकलोगे तो एक बहुत बड़ा खजाना तुम्हारा इन्तजार कर रहा है।"

सबेरा होने पर लौरैन्स घर पहुँचा तो कैरौल ने फिर पूछा — "भाई, आज भी तुम्हें कोई दिखायी दिया क्या?"

लौरैन्स बोला — "हॉ दिखायी तो दिया परन्तु क्योंकि मैं वहॉ था इसी लिये मेरी मॉ का शरीर बच गया पर अब उसके शरीर को कोई खतरा नहीं है।"

अगले दिन लौरैन्स ने कैरौल से कहा कि वह उसको उसके हिस्से का पैसा दे दे क्योंकि वह देश विदेश घूमने जाना चाहता है। कैरौल ने उसके हिस्से का पैसा उसे दे दिया और लौरैन्स देश विदेश घूमने के लिये निकल पड़ा।

चलते चलते वह एक बड़े से शहर में पहुँचा। वहॉ वह एक डबल रोटी बनाने वाले के घर पहुँचा और खाने के लिये उससे डबल रोटी मॉगी।

डबल रोटी वाला उससे बात करने लगा तो बातों बातों में उसने पूछा कि वह कहॉ जा रहा था। लौरैन्स बोला कि वह किसी ऐसी चीज़ की तलाश में था जो उसे डरा सके।

डबल रोटी वाले ने पूछा "क्या तुम्हारे पास काफी पैसा है?"

इस पर लौरैन्स बोला — "हॉ मेरे पास पचास पौंड हैं।"

डबल रोटी वाला बोला — "ठीक है मैं तुमको पचास पौंड और दूँगा अगर तुम मेरे बतायी हुई जगह पर चले जाओ तो।"

लौरैन्स बोला — "अगर वह जगह यहाँ से बहुत दूर नहीं है तो मैं तुम्हारी शर्त मान लेता हूँ।"

डबल रोटी बनाने वाला बोला — "ओह नहीं नहीं, वह तो यहाँ से एक मील दूर भी नहीं है। शाम होने तक तुम यहीं रहो। रात में तुम उस कब्रिस्तान में जाना। वहाँ पर एक पुराना चर्च है। निशानी के तौर पर तुम वहाँ से मुझको वहाँ रखा हुआ एक प्याला ला कर दे देना।"

डबल रोटी बनाने वाले ने जब यह शर्त उसके सामने रखी थी तब उसे पूरा विश्वास था कि शर्त वही जीतेगा क्योंकि उस कब्रिस्तान में एक भूत रहता था और वहाँ जो कोई भी जाने की कोशिश करता था वह भूत उसको मार डालता था।

रात हुई तो लौरैन्स अपनी तलवार ले कर उस कब्रिस्तान में पहुँचा। वह चर्च के दरवाजे तक पहुँच गया। अपनी तलवार की नोक मार कर उसने चर्च का दरवाजा खोला। दरवाजा खुलते ही उसमें से लम्बे सींगों वाला एक बड़ा काला बकरा निकला।

लौरैन्स ने तुरन्त ही उस पर तलवार से वार किया तो बकरा तो भाग गया पर वह जगह उसके खून से लाल हो गयी। लौरैन्स अन्दर चला गया, उसने वहाँ रखा प्याला उठाया और ला कर डबल रोटी वाले को दे दिया। इस तरह लौरैन्स शर्त जीत गया।

डबल रोटी वाले ने पूछा — "भाई, तुमने वहॉ कुछ देखा?"

लौरैन्स बोला — "हॉ, मुझे वहॉ पर एक बड़ा काला बकरा दिखायी दिया था। उसको मैंने तलवार से मारा तो बकरा तो भाग गया पर तलवार के वार से उसका काफी खून बह गया। इतना कि उसमें एक नाव तैर सकती थी। मुझे लगता है कि वह बकरा तो अब तक कभी का मर गया होगा।"

सबेरा होते ही डबल रोटी वाले ने काफी लोगों को इकट्ठा किया और चर्च की तरफ चला तो वहॉ वाकई काफी सारा खून पड़ा पाया। यह सब देख कर वह पादरी के पास पहुँचा और उसको बताया कि अब चर्च में काला बकरा नहीं है।

पादरी को तो विश्वास ही नहीं हुआ सो वह खुद चर्च गया और वहॉ जा कर देखा तो वास्तव में अब वहॉ कोई काला बकरा नहीं था सो वह तो बहुत ही खुश हो गया। क्योंकि जब भी वह वहॉ पूजा किया करता था वह काला बकरा आ कर उसकी पूजा की सारी चीज़ें इधर उधर कर दिया करता था।

आज उस पादरी ने निडर हो कर बिना किसी रोक टोक के पूजा की और लौरैन्स को खास आशीर्वाद दिया और साथ ही उसको पचास पौंड और भी दिये।

अगले दिन लौरेन्स फिर से अपने सफर पर निकल पड़ा। सारा दिन वह सफर करता रहा पर उसे कोई घर ही नहीं दिखायी पड़ा। आधी रात के समय वह एक सुनसान अकेली घाटी में आ गया।

आसमान में पूरा चॉद खिला हुआ था। उसकी रोशनी पूरी घाटी में फैली पड़ी थी।

उसी रोशनी में उसने देखा कि एक जगह पर बहुत सारे लोग इकट्ठा हैं और वे दो आदमियों को भागते हुए देख रहे थे। इतने में उन दो आदमियों में से एक आदमी ने एक गेंद लौरैन्स की छाती में मारी।

लौरैन्स का हाथ तुरन्त ही अपनी छाती की तरफ चला गया ताकि वह उस गेंद को वहॉ से निकाल सके पर वहॉ तो गेंद नहीं थी बल्कि कुछ और ही था – वहॉ तो एक आदमी का सिर था।

लौरैन्स ने उस सिर को ही पकड़ लिया तो वह सिर चीखने लगा और बोला — "क्या तुमको मुझसे डर नहीं लग रहा है?"

लौरैन्स बोला — "नहीं, मुझे तुमसे डर क्यों लगेगा?" और लौरेन्स के ये शब्द बोलते ही वहॉ उसको दिखायी देने वाला सब कुछ गायब हो गया और वह फिर से उस चॉदनी भरी घाटी में अकेला खड़ा रह गया।

चलते चलते वह एक दूसरे शहर में आया। वहॉ घूमते घूमते वह सड़क के किनारे बने एक बड़े से घर के सामने रुक गया। रात होने वाली थी सो वह रात को वहीं सोना चाहता था।

तभी एक नौजवान घर में से बाहर निकला और उससे पूछा — "क्या चाहते हो भाई?"

लौरैन्स बोला — "मैं एक ऐसी चीज़ की तलाश में हूँ जिससे मैं डर जाऊँ।"

वह नौजवान बोला तब तुमको दूर जाने की जरूरत नहीं है।"

कह कर वह उसको अपने सामने वाले घर में ले गया और बोला — "देखो, इस मकान में नीचे एक तहखाना है। वहाँ जा कर तुम अपने लिये आग जला लो। मैं तुम्हें खूब सारा खाना पीना भेज देता हूँ। अगर तुम सुबह तक वहाँ रह गये तो मैं तुमको पचास पौंड दूँगा।"

लौरैन्स बोला "मैं तैयार हूँ।"

इतना कह कर लौरैन्स नीचे तहखाने में चला गया और वहाँ जा कर उसने आग जलायी। तभी एक लड़की उसके लिये खूब सारा खाना और शराब की बोतलें ले कर आ गयी। लौरैन्स ने आराम से खाना खाया और सोने के लिये लेट गया।

आधी रात के करीब वहाँ एक घोड़ा और साँड़ आ गये और आपस में लड़ने लगे। लौरैन्स ने कुछ नहीं कहा, बस वह केवल उनकी लड़ाई देखता रहा। जब वे लड़ते लड़ते थक गये तो वे चले गये। उधर लौरैन्स भी सो गया।

सुबह उस नौजवान ने ही आ कर उसे उठाया। उस नौजवान को लौरैन्स को ज़िन्दा देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ।

उसने पूछा — "क्या तुमने रात को यहाँ कुछ देखा?"

लौरैन्स बोला — "हॉ देखा था। एक घोड़ा और एक सॉड़ आये और आपस में लड़ने लगे। वे करीब करीब दो घंटे तक लड़ते रहे फिर चले गये।"

उस नौजवान ने पूछा — "तुम डरे नहीं?"

लौरेन्स बोला "नहीं।"

वह नौजवान बोला — "अगर तुम आज रात को यहॉ और रुको तो मैं तुम्हें पचास पौंड और दूँगा।" लौरेन्स राजी हो गया।

रात दस बजे लौरैन्स सोने की तैयारी कर रहा था कि वहॉ दो काले बकरे आये और आ कर लड़ने लगे। लौरैन्स आज भी उनकी लड़ाई केवल देखता रहा, कुछ किया नहीं। रात को बारह बजे के बाद वे भी चले गये।

अगले दिन उस नौजवान ने आ कर पूछा — "क्या कल रात तुम्हें कुछ दिखायी दिया?"

लौरैन्स बोला — "हॉ, कल रात यहॉ दो काले बकरे आये थे। वे भी लड़ते रहे और फिर चले गये।"

नौजवान ने पूछा — "तुम डरे नहीं?"

"नहीं तो।"

नौजवान बोला — "अच्छा, तो आज की रात तुम और रुको और मैं तुमको कल पचास पौंड और दूँगा।"

सो तीसरी रात जब लौरैन्स सोने की तैयारी कर रहा था तो एक बूढ़ा वहॉ आया। यह वही बूढ़ा था जो लौरैन्स के पास तब आया था जब वह अपनी मॉ की कब्र की रखवाली कर रहा था और जिसने उसे खजाने की खोज में यात्रा पर भेजा था।

वह लौरेन्स से बोला — "तुम आयरलैंड के सबसे अच्छे आदमी हो। मुझे मरे हुए बीस साल हो गये तबसे आज तक मैं तुम्हारे जैसे आदमी की तलाश में हूॅ।

आओ मैं तुमको खजाना दिखाता हूॅ। तुम्हें याद है न? जब तुम अपनी मॉ की कब्र की पहरेदारी कर रहे थे तब मैंने तुमसे कहा था कि एक बहुत बड़ा खजाना तुम्हारा इन्तजार कर रहा है। आज वह समय आ गया है।"

वह लौरेन्स को और भी नीचे वाले तहखाने में ले गया और सोने से भरा एक बड़ा सा बरतन दिखाते हुए बोला — "यह सब खजाना तुम्हारा है अगर बीस पौंड तुम मेरी विधवा पत्नी मैरी को दे दोगे और उससे मेरी की हुई एक गलती की माफी मॉग लोगे।

उसके बाद तुम यह घर खरीद लेना और मेरी बेटी से शादी कर लेना। फिर तुम ज़िन्दगी भर खुश और अमीर रहना।"

सबेरे वह नौजवान फिर आया और लौरैन्स से पूछा कि क्या उसने वहॉ रात में कुछ देखा था?

इस बार लौरेन्स बोला — "हॉ, देखा था और यह पक्की बात है कि इसमें हमेशा ही भूत रहेगा। पर दुनियॉ की कोई भी चीज़ मुझे

किसी से भी नहीं डरा सकती। मैं यह घर और इसके चारों तरफ की जमीन खरीदना चाहता हूँ।"

नौजवान बोला — "मैं यह घर तो तुम्हें मुफ्त दे दूँगा पर इसके चारों तरफ की जमीन तुम्हें एक हजार पौंड से कम में नहीं दूँगा और मुझे विश्वास है कि तुम्हारे पास इतने पैसे होंगे नहीं।"

लौरैन्स बोला — "मेरे पास इतना सारा पैसा है जिसका तुम्हें अन्दाजा भी नहीं है। मुझे मंजूर है।"

जब उस नौजवान को यह पता चला कि लौरैन्स इतना ज़्यादा अमीर है तो उसने लौरैन्स को अपने घर खाने की दावत दी। लौरेन्स उसके घर गया। वहाँ जब उस बूढ़े की लड़की ने उसको देखा तो वह उस पर मोहित हो गयी।

लौरेन्स फिर मैरी के घर गया। वहाँ उसने उसे **20** पौंड दिये और उस बूढ़े की गलती के लिये माफी माँगी। फिर उसने उस नौजवान की बहिन के साथ शादी कर ली और खुशी खुशी रहने लगा। जितने दिन भी वह ज़िन्दा रहा कभी किसी से डरा नहीं।

13 कवि शौनचन और बिल्लियों का राजा[57]

जब कवि शौनचन[58] को आयरलैंड का कविराज घोषित किया गया तो कौनौट के राजा गुऐर[59] ने एक बहुत बड़ी दावत का इन्तजाम किया जिसमें देश के टीचर, विद्वान, कलाकार, वैज्ञानिक आदि सबको बुलाया गया था।

राजा ने सबकी मेहमानी का खूब अच्छा इन्तजाम कर रखा था। रोज वह सबसे जा कर पूछता — "आप सब ठीक तो हैं न?" पर फिर भी वे सब राजा के इन्तजाम से खुश नहीं थे।

वे लोग कुछ ऐसी चीज़ें चाहते थे जिनको राजा जुटा नहीं पा रहा था। इसलिये राजा भी बहुत दुखी था और रोज भगवान से प्रार्थना करता था कि वह उसको उनके नाखुश होने से बचाये। फिर भी वह दावत तीन दिन और तीन रात चली और लोगों ने खूब खाया और खूब पिया।

कवि शौनचन बहुत दुखी था। वह न कुछ खा रहा था और न कुछ पी रहा था क्योंकि वह कौनौट के दरबारियों से बहुत जलता था और जब वह यह देखता कि वे सबसे अच्छा मॉस और शराब खा पी रहे थे तो उसने यह घोषणा कर दी कि जब तक उन

[57] Poet Seanchan and the King of Cats – a folktale from Ireland, Europe
[58] Seanchan – name of the poet
[59] King Guair of Connaught town

दरबारियों और उनके नौकरों को उस घर से नहीं भेज दिया जायेगा वह न कुछ खायेगा और न कुछ पियेगा।

और जब गुऐर ने उनसे फिर पूछा — "आप सब लोग ठीक तो हैं न?"

तो शौनचन ने जवाब दिया — "इससे पहले मैंने इतने बुरे दिन और इतनी खराब रातें कभी नहीं बितायीं और न ही इतना खराब खाना खाया।" और सचमुच ही उसने पूरे तीन दिन तक कुछ भी नहीं खाया था।

राजा बहुत दुखी हुआ। उसके दूसरे मेहमान तो सब आनन्द मना रहे थे और उसका जो खास मेहमान था जिसके लिये इस दावत का इन्तजाम किया गया था वह उपवास कर रहा था।

यह देख कर राजा ने अपने सबसे प्रिय और सबसे ज़्यादा होशियार नौकर को बुलाया और उसको कविराज के पास खास खाना ले जाने के लिये कहा। वह वह खास खाना ले कर कविराज के पास गया।

शौनचन ने उसे देखते ही कहा — "इस सबको ले जाओ यहॉ से। मैं इसमें से कुछ भी नहीं खाऊॅगा।"

नौकर बड़ी नम्रता से बोला — "ऐसा क्यों हुजूर?"

शौनचन बोला — "क्योंकि तुम साफ आदमी नहीं हो। तुम्हारे दादा जी के हाथों के सब नाखून टूटे हुए थे। मैंने उनको देखा है।

ऐसी हालत में मैं तुम्हारे हाथ का खाना तो बिल्कुल नहीं खा सकता।"

राजा ने फिर एक सुन्दर लड़की को बुलाया और उसको कविराज के पास खाना ले जाने के लिये कहा पर जब शौनचन ने उसे देखा तो कहा — "तुमको यहाँ किसने भेजा है और तुम यह खाना मेरे लिये क्यों लायी हो?"

लड़की बोली — "मालिक, मुझे राजा ने भेजा है। क्योंकि मैं बहुत सुन्दर हूँ इसलिये राजा ने कहा कि मैं खुद अपने हाथों से आप को खाना खिलाऊँ।"

शौनचन बोला — "ले जाओ यह सब। तुम बिल्कुल भी सुन्दर नहीं हो। तुमसे ज़्यादा बदसूरत तो मैंने और कोई देखा ही नहीं। एक दिन तुम्हारी दादी दीवार पर बैठी राह चलते कोढ़ी को उँगली दिखा रही थी। मैं तुम्हारे हाथ का खाना तो छू भी नहीं सकता।"

इस पर राजा गुऐर बहुत नाराज हुआ और बोला — "मैं उन होठों को शाप देता हूँ जिन्होंने ऐसा कहा। मरने से पहले उन होठों को कोई कोढ़ी जरूर चूमेगा।"

वहाँ खड़ी एक नौकरानी यह सब सुन रही थी। वह शौनचन से बोली — "एक जगह एक मुर्गी का अंडा रखा है कविराज। अगर आप कहें तो मैं आपके लिये वह अंडा ला दूँ?"

शौनचन बोला — "ठीक है वही ला दो। मैं उसी से अपना काम चला लूँगा।" पर जब वह वह अंडा लाने गयी तो वह अंडा तो अपनी जगह पर नहीं था।

कविराज बोले — "लगता है कि वह अंडा तूने ही खाया है।"

नौकरानी गिड़गिड़ाते हुए बोली — "नहीं मालिक, लगता है कि कोई चुहिया उसको ले गयी है।"

इस पर शौनचन बोला — "अगर ऐसा है तो मैं उन चुहियों पर एक व्यंग्य वाली कविता लिख दूँगा।"

और जब कविराज ने ऐसी एक कविता लिखी तो उसके असर से बहुत सारी चुहियें तो उसके सामने ही मर गयीं।

शौनचन बोला — "यह सब तो ठीक है पर वास्तव में बिल्ला ही इस सबका जिम्मेदार है क्योंकि उसको चुहियों को दबा कर रखना चाहिये था इसलिये अब मैं बिल्लियों के राजा पर व्यंग्य वाली कविता लिखूँगा।

"ओ इरूसन[60], तुम चूहों को मारते तो हो परन्तु उनको छोड़ भी देते हो। ओ कमजोर बिल्ले, तुम सबको तो अपनी मूँछें नीची कर लेनी चाहिये क्योंकि तुमने चूहों को जरूरत से ज़्यादा आजादी दे रखी है और वे तुम्हारी हँसी उड़ा रहे हैं।"

[60] Irusan – name of the King of cats

इरूसन अपने घर में बैठा बैठा उसकी यह व्यंग्य वाली कविता सुन रहा था। वह अपनी बेटी से बोला — "शौनचन ने मेरी खिल्ली उड़ायी है मैं उससे इसका बदला जरूर लूँगा।"

बेटी बोली — "पिता जी, आप उनसे बदला न लें बल्कि उन्हें यहाँ ज़िन्दा ही ले आयें ताकि हम सब उनसे अपना बदला ले सकें।"

इरूसन को अपनी बेटी की बात समझ में आ गयी। वह बोला — "तुम ठीक कहती हो बेटी। अच्छा ऐसा करो, अपने भाइयों को बोलो कि वे भी मेरे साथ चलें।"

इधर जब शौनचन ने सुना कि बिल्लियों का राजा उसे पकड़ने आ रहा है तो वह घबरा गया। उसने राजा गुएर और वहाँ पर मौजूद सभी दरबारियों से प्रार्थना की कि वे सब उसके पास रहें और बिल्लियों के राजा से उसकी रक्षा करें क्योंकि वह उसको पकड़ने आ रहा था।

इतने में ही उनको किसी के आने की बड़ी ज़ोर की आवाज सुनायी देने लगी और जल्दी ही बिल्लियों का राजा उनको आता भी दिखायी देने लगा। वह बिल्ला उन लोगों को बैल जितना बड़ा दिखायी दे रहा था।

वह बिल्ला बहुत गुस्से में भरा था। वह हाँफ रहा था, उसके कान खड़े हुए थे और उसके तेज़ दाँत बाहर निकले हुए थे। वह वहाँ खड़े हुए लोगों की तरफ बिल्कुल भी ध्यान न देते हुए सीधा

कवि शौनचन के पास जा पहुँचा। उसने शौनचन की बाँह पकड़ कर उसको अपनी पीठ पर लादा और अपने घर की तरफ चल दिया।

शौनचन तो कवि था सो रास्ते में उसने बिल्लियों के राजा की तारीफ करनी शुरू कर दी — "ओ इरूसन, तुम कितने बड़े हो, तुम्हारी कूद कितनी शानदार है, ताकतवर है और सुन्दर है।

परन्तु मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? ओ इरूसन, ओ अरूसन[61] के बेटे, मुझे छोड़ दो। मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ, ओ बिल्लिों के राजा।"

परन्तु इरूसन के कानों पर इस तारीफ का कोई असर नहीं हुआ। वह सीधा क्लौनमैकनोइज़[62] आ गया जहाँ सेन्ट कीरन[63] दरवाजे पर खड़ा उसका इन्तजार कर रहा था।

सेन्ट उसको देखते ही बोला — "अरे यह क्या? ऐरिन[64] का महाकवि बिल्ले की पीठ पर? क्या राजा गुएर की उदारता बिल्कुल ही खत्म हो चुकी है?"

और यह कहता हुआ वह भट्टी में से लोहे का गरम डंडा निकाल लाया और उसको उस बिल्ले के ऊपर ऐसे मारा कि वह बिल्ले के शरीर के पार हो गया और बिल्ला वहीं गिर कर मर गया।

कवि बोला — "बिल्ले को मारने वाले को मैं शाप देता हूँ।"

---

[61] Arusan – name of the father of the King of Rats

[62] Clonmacnoise

[63] Saint Kieran

[64] Erin – a place in Ireland

सेन्ट कीरन बोला — "मगर क्यों?"

कवि बोला — "क्योंकि मैं इरूसन के हाथों मारा जाना और उसके द्वारा खाया जाना ज़्यादा पसन्द करता ताकि यह राजा गुऐर की बदनामी करता कि उसने मुझे कितना खराब खाना खिलाया क्योंकि यह सब उसी की वजह से हुआ।"

यह सब जब और दूसरे राजाओं ने सुना तो उन्होंने उससे प्रार्थना की कि वह उनके दरबार में आ जाये लेकिन शौनचन कहीं नहीं गया। वह सीधा "कवियों के घर" चला गया जहॉ हमेशा ही अच्छा रहना सहना था।

जितने दिन वह वहॉ रहा उन सबका सरदार बन कर रहा। सारे दरबारी उससे नीचे बैठते थे। कुछ दिनों बाद राजा गुऐर से भी उसकी दोस्ती हो गयी। उन्होंने फिर वहॉ तीस दिन तक आनन्द मनाया।

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com
1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com
1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — 10 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — 45 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com
1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — प्रभात प्रकाशन
4 शेबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।
1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html
6 इटली की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html
8 इटली की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं–4
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं–5
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं–6
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं–7
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
13 इटली की लोक कथाऐं–8
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
14 इटली की लोक कथाऐं–9
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
15 इटली की लोक कथाऐं–10
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
16 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
17 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on May 27, 2018

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
मई **2018**